क्वेटा का भूकम्प

१९३५

भारत सरकार के अधिकार से प्रकाशित

आर्मी प्रेस, में छपा.
शिमला।

क्वेटा का भूकम्प

१९३५

भारत सरकार के अधिकार से प्रकाशित

आर्मी प्रेस, मे विला,

शिमला।

सूची

पृष्ठ

परिच्छेद १—क्वेटा और उसका आसपास ... १—३
परिच्छेद २—भूकम्प ... ... ४—९
परिच्छेद ३—अधिकारियों ने परिस्थिति का मुकाबला कैसे किया ... १०—१६
परिच्छेद ४—विध्वस्त क्षेत्रों में सहायता और उद्धार कार्य ... ... १७—२६
परिच्छेद ५—क्वेटे से बाहर सहायता कार्य ... २७—३६
परिच्छेद ६—उद्धार और सहायता के उपाय ३७—४०
परिच्छेद ७—क्वेटे में मार्शल ला .... ४१—४४
परिच्छेद ८—क्वेटा का भविष्य ... ४५—४६

क्वेटा का मान चित्र

प्राक्कथन

इस पुस्तक का विषय विविध स्रोतों से, जो प्रायः सब सरकारी हैं, संग्रह किया गया है । इस पुस्तक के प्रकाशन का उद्देश्य यही है कि लोगों को संक्षेप में क्वेटा के भीषण भूकम्प का सच्चा वर्णन मालूम हो जाय और यह भी मालूम हो जाय कि इस भीषण परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए किन उपायों का आश्रय किया गया है । यह विवरण विशद नहीं है । भूकम्प के पश्चात रायल कार्प्स आफ सिगनल्स और डाक व तार विभाग या सीमा प्रांत, संयुक्त प्रांत और बम्बई के अधिकारियों ने किस प्रकार सेवा-सहायता कार्य किया इसका उल्लेख इस पुस्तक में नहीं किया गया है। गैर सरकारी संस्थाओं तथा जन साधारण ने जिस विशाल मात्रा में सहायता पहुंचायी उसका वर्णन नहीं हो सकता, इसलिए उसकी स्थूल रूप-रेखा ही दी जाती है ।

यदि इस पुस्तक को पढ़ कर पाठक उन महान प्रयत्नों को, जो, अंग्रेजों और भारतीयों द्वारा समान रूप से इस भीषण संकट के समय सहायता पहुंचाने और कष्ट हरण के लिए किये गये थे, हृदयंगम करसके तो इस पुस्तक का उद्देश्य भी सफल हो जायगा ।

२९. अगस्त १९३५ ।

परिच्छेद १

क्वेटा और उसका आसपास

क्वेटा (अथवा शाल अर्थात "किला" नाम दसवीं शताब्दी में पड़ा था) समस्त भारत में सबसे बड़ा और प्रायः सबसे अधिक महत्वपूर्ण सैन्य सञ्चालन केन्द्र है। बिलोचिस्तान एजेन्सी की राजधानी के रूप में सन् १८७६ से, जब कि इसे कलात के खान से लीजपर लिया गया था, इसकी मुल्की और फौजी जन संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। पिछले पचास बरसों में इसकी आबादी तिगुनी बढ़ गयी है और मई ३१ सन् १९३५ के सम्बन्ध में यह अनुमान किया जाता है कि इस में लगभग ७० हजार व्यक्ति रहे होंगे। इन में लगभग २५ हजार ३१ मई को रात के ३ बजे एक ही मिनट में कराल काल के गाल में चले गये।

क्वेटा क्षेत्र में पुराकाल से ही भूकम्प आते रहे हैं। भूतात्विक दृष्टि से क्वेटा की जमीन की तह और पेशावर से करांची के बीच पहाड़ों का निर्माण कुछ ऐसा विचित्र हुआ है कि बिलोचिस्तान के प्लेटो में जमीन के भीतर ही भीतर लगातार दबाव पड़ रहा है जिस से यह प्लेटो समय-समय पर आगे की ओर लुढ़का करता है। १३ अगस्त को भारत सरकार द्वारा "भूकम्प और उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में भूगर्भ विषयक वर्णन" में इन तथ्यों पर प्रकाश डाला जा चुका है। सन् १९३१ के दो भीषण भूकम्पों का स्मरण होते हुए भी ३१ मई की रात को सोने के वक्त किसी भी क्वेटा निवासी के मन में स्वप्न में भी यह विचार पैदा न हुआ कि आज भूकम्प आवेगा। सामुद्रिक तूफान, आंधी और प्रकृति के अन्य अनियन्त्रित प्रभाव किसी प्रकार की पूर्व सूचना नहीं देते।

भूकम्प के सम्बन्ध में पाठकों की पूरी जानकारी के लिए क्वेटा का साधारण ब्योरा दे देना अनुचित न होगा। छावनी, सिविल स्टेशन और शहर का पूरा रकबा २५ वर्ग मील है। दुर्रानी नाले ने इसका बटवारा कर दिया है। उत्तर में छावनी और दक्षिण में शहर तथा सिविल स्टेशन। पश्चिम के छोर पर रायल एयर फोर्स लाइन्स

और हवाई जहाजों का अड्डा है और पूर्व के छोर पर
।

छावनी निवासी सैन्य समूह में निम्न फौजें थीं:—

वेस्टर्न कमांड का हेड क्वार्टर (स्थानापन्न जेन
कमांडिंग-इन-चीफ मेजर-जेनरल एच. कार्सलेक)।

बिलोचिस्तान डिस्ट्रिक्ट का हेड क्वार्टर।

दो भारतीय पैदल फौजों के हेड क्वार्टर।

स्टाफ और स्टूडेन्ट्स, स्टाफ कालेज।

---

१ घुड़ सवार फौज।

२ बैटरीज फील्ड आर्टिलरी।

१ ब्रिगेड माउन्टेन आर्टिलरी।

२ सफरमैना की कम्पनियां।

बिलोचिस्तान डिस्ट्रिक्ट की मिलिटरी इंजीनि

१ सर्वे कम्पनी।

१ इन्डियन डिवीजनल सिगनल्स।

२ ब्रिटिश इन्फैन्ट्री बैटालियन।

५ इन्डियन इन्फैन्ट्री बटालियन (जिस के साथ
कम्पनी भी है)।

रायल इन्डियन आर्मी सर्विस कार्प्स:—

१ सप्लाई डिपाट

३ आर्मी ट्रान्सपोर्ट कम्पनियां

२ मोटर ट्रान्सपोर्ट कम्पनियां

एक ब्रिटिश मिलिटरी अस्पताल

एक इन्डियन मिलिटरी अस्पताल

१ कम्पनी इन्डियन हास्पिटल कार्प्स

१ मिलिटरी वेटिरिनरी अस्पताल

मिलिटरी फार्म्स डिपार्टमेन्ट

गवर्नमेन्ट मिलिटरी डेयरी

एक वायरलेस डिटैचमैंट

चपेरा आर्सनल

रायल एयर फोर्स लाइन्स में (जो ठीक छावनी के भीतर नहीं है) रायल एयर फोर्स का थर्ड विंग, पांचवीं और ३१ वीं आर्मी कोआपरेशन स्काड्रन थीं। छावनी की कोई भी इमारत भूकम्प-प्रूफ नहीं है और कुल रकबा में, अधिकांश छावनियों की तरह, चौड़ी सड़कें और खुले मैदान हैं।

घातक नाले की दक्षिण ओर क्वेटा शहर है, जिसकी पश्चिम और दक्षिण ओर सिविल स्टेशन और रेलवे कोलोनी हैं। दूसरे बड़े शहरों की तुलना में क्वेटा शहर का रकबा छोटा था, किन्तु अधिकांश भारतीय नगरों की भांति इसकी भीतरी आबादी बढ़ती गयी और ऊंचे-ऊंचे मकान बनते गये, लेकिन रकबा उतना नहीं बढ़ा। ब्रूस और मस्जिद रोड की भांति कुछ प्रमुख मार्गों को छोड़ कर क्वेटा की सड़कें तंग और छोटी २ थीं साथ ही ऐसी सड़कों की संख्या भी अधिक थी। कुछ धनिकों के मकानों को छोड़ कर अधिकांश मकान बालू-चूना के योग से ईंटों के या मिट्टी के बने हुए थे। ज्यों ज्यों आबादी बढ़ती गयी मकानों की मंजिलें भी बढ़ती गयीं। भूकम्प के समय येही मौत का जाल बनीं।

सिविल स्टेशन, जिसके भीतर खूबसूरती के साथ बनायी गयी लिटन रोड है, शहर और एन० डबल्यू. स्टेशन के मध्य में है और उसमें अफसरों के रहने के लिए पुरानी चाल के बंगले हैं। रेलवे लाइन और स्टेशन से पश्चिम तरफ कुछ आगे रेसकोर्स और क्वेटा पुलिस लाइन्स है।

इस दक्षिणी क्षेत्र के चारों तरफ कुछ मील के दायरे में छोटे छोटे गांव बसे हुए थे जिन में खेतिहर और किसान रहते थे जो समाज को खाद्य पदार्थ पहुंचाते थे।

स्वाभाविक रूप से हमारा ध्यान क्वेटा के प्रलयंकर भूकम्प की ही ओर खिंचता है किन्तु अवशिष्ट ध्वस्त क्षेत्र की ओर दृष्टिपात करना भी उचित है। उत्तर में क्वेटा से दक्षिण में कलात तक, ७० मील लम्बा और १५ मील चौड़ा क्षेत्र जिसके अन्तर्गत सरियाब, मस्तंग और मांगी के कस्बे हैं, विनष्ट हो गया है। सौभाग्य से बिहार और कांगड़ा की तुलना में छिछली घाटी और उसरीली पहाड़ियों के इस क्षेत्र में बस्तियां बहुत दूर दूर पर हैं। यही भूकम्प का केन्द्र स्थान था।

परिच्छेद २

भूकम्प

३० मई १९३५ को रात के ३ बज कर ३ मिनट पर भूगर्भ जनित दुर्निवार अन्दोलन ने क्वेटा का गला दबोच लिया और २५ सेकन्ड तक प्राणान्तक वेग से उसे झिंझोड़ कर निर्जीव बना दिया। भूकम्प का प्रभाव कलात से मस्तंग और खरियाब तक ७० मील से भी अधिक क्षेत्र पर पड़ा है जिस के कारण खेड़े और गांव विध्वंस हो गये।

उस घातक काले की दक्षिण और क्वेटा का दृश्य अवर्णनीय है। सारा शहर सो रहा था, स्त्री पुरुष और बच्चे छोटे-बड़े कमरों, बरान्डों में और छतों पर सोरहे थे, और जानवर छोटे-छोटे घरों में बंधे थे। एक विशाल जनसमुदाय ताश के मकान में खुर्राटे ले रहा था और एक-एक ताश एक-एक टन के बराबर वजनदार था। सिविल स्टेशन, रेलवे कार्टर्स, पुलिस लाइन्स और आर.ए.एफ. लाइन्स में भी स्त्री-पुरुष और बच्चे गाढ़ निद्रा में सोरहे थे।

सड़कों की बत्तियां जल रही हैं, पुलिस के कांस्टेबल गश्त लगा रहे हैं, चौकीदार हांक मार रहा है। रातें अब भी ठंडी हैं और बरान्डा या घर के बाहर सिर्फ वे ही सोये हैं जो हृष्ट-पुष्ट अथवा गरीब हैं।

इतने ही में मानो डिनामाइट का धड़ाका हुआ, पृथ्वी पर एक प्रकार की भीषण गर्जना हुई और एक मिनट से भी कम में क्वेटा कब्रगाह, कत्लगाह बन गया। निर्ममता, आकस्मिकता और क्रूरता में क्वेटा का भूकम्प कांगड़ा और बिहार के भूकम्प से बढ़ चढ़ कर था। भूकम्प की लहर क्वेटा को खंडहर और मलबे का ढेर बनाकर चली गयी, लेकिन न उस से कीचड़ उबला और न कोई और दूसरा निशान बना हां कुछ दरारें जरूर पड़ गयीं।

भूकम्प से १० मिनट बाद तक किसी को होश न रहा कि हुआ क्या। उसके बाद मानवता के प्रकृतिगत भाव उदित हुए और हम कल्पना शक्ति के द्वारा उन हृदय विदारक दृश्यों का चित्र खींच सकते हैं।

आकाश में चांद न था। घोर अन्धकार था। बड़ी, छोटी सड़कें पहचानी न जा सकती थीं क्योंकि उन पर मलबे का ढेर जमा हो रहा था। जमीन पर के सब निशान गायब हो गये। बिजली की बत्तियां बुझ गयीं। पुलिस मर गयी और बाह्य जगत से क्वेटा का आवागमन कट-सा हो गया।

रायल एयर फोर्स का बड़ा नुकसान हुआ। नं० ३ (इन्डियन) विंग एक तरह से नेस्तनाबूद हो गया। रात के साढ़े तीन बजे चार अफसर, जो अपने-आप मलवा खोद कर निकल आये, आर.ए.एफ. लाइन्स में पहुंचे और देखा कि सबके सब बैरक ढेर हो गये। कहीं भी जिन्दा आदमी दिखायी न दिया। "बैरक के ब्लाक बिलकुल साफ हो गये थे जिनकी हालत तीन साल के युद्ध के बाद फ्रांस की अगली कतार के गांव से मिलती-जुलती थी।" ब्रिटिश और भारतीय जनों को मिला कर इस में कुल ६५६ व्यक्ति थे जिन में १४८ मर गये और ३१ फीसदी घायल हो गये। जो मरने से बचे वे बाकी रात अपने साथियों को मलवे के नीचे से खोदते रहे और साथ ही साथ ताज्जुब करते कि दिन को कैसा भीषण दृश्य दिखायी देगा। (यहां यह बता देना भी प्रासंगिक होगा कि २७ हवाई जहाजों में केवल ३ ही ऐसे बचे जो काम लायक थे और ये भी दिन के साढ़े ग्यारह बजे आकाश में उड़ कर चमन, पिशिन, जियारत, लोरालाई और सिबीका निरीक्षण करने लगे। इस प्रकार सिद्ध है कि रायल एयर फोर्स अपने उद्देश्य को पूरा करने के ही लिए जीवित है। श्रम से ही सम्मान है।)

सौभाग्य से, या यों कहिये, ईश्वर की कृपा से अतुलनीय सहायता का साधन प्राप्त हुआ। दुर्रानी नाला की तरफ हबीबुल्ला नाला के उसपार भूकम्प का प्रभाव उत्तर तरफ कुछ ही दूर तक पहुंचा था जिस से जेनरल अफसर कमांडिंग-इन-चीफ का मकान जो खाली पड़ा था जमींदोज हो गया और साथ ही बहुत से बसे हुए बंगले भी नष्ट हो गये लेकिन संयोग से जननाश अधिक न हुआ। किन्तु

छावनी भूकम्प का गहरा धक्का खा कर ही रह गयी जिस से १२ हजार सशक्त, मंजे हुए फौजी किसी भी आज्ञा का पालन करने को तैयार पाये गये।

इसके बाद, युद्ध अथवा शान्ति के समय में ऐसी परिस्थिति को जिस प्रकार योग्यता पूर्वक संभाला जाता है, इस भीषण परिस्थिति का मुकाबला भी अत्यन्त दक्षता और शीघ्रतापूर्वक किया गया जिसके लिए भारतस्थ सेना के इतिहास में एक रिकार्ड स्थापित है। भारतीय और संसार के अन्य समाचारपत्रों तथा सरकारी विज्ञप्तियों से शायद यह मालूम दे कि क्वेटा गैरिजन और इसके कमांडर जेनरल कार्सलेक की काफी प्रशंसा हुई है, किन्तु जब कोई व्यक्ति सहायता और उद्धारकार्य में संलग्न सेना के कार्यों की सच्ची, पक्षपातहीन और बहुमत प्रकट करने वाली रिपोर्ट के अन्तर में प्रविष्ट होगा तो उसे उस महान कार्य का आभास मिलेगा जिसे सेना ने पूरा किया और जिसका अतिरंजन सर्वथा असम्भव है।

गिरते हुए बंगले की आवाज से जेनरल कार्सलेक की नींद टूट गयी और उन्होंने मोटरकार द्वारा एक स्टाफ अफसर को भेज कर गैरिजन को सहायता कार्य में जुट जाने का आदेश दिया। अंधकार के कारण ठीक २ निरीक्षण करना तो असम्भव था किन्तु दिन निकलने से पहले ही यह मालूम हो गया कि निम्न लिखित स्थान पूर्णत: नष्ट हो गये :—

(क) पूरा शहर।

(ख) सिविल लाइन्स जिसमें रेजीडेन्सी, पोस्ट आफिस, टेलीग्राफ आफिस और रेलवे क्वार्टर्स भी शामिल हैं।

(ग) आर.ए.एफ. की प्राय: अधिकांश लाइनें।

(घ) छावनी के दक्षिणी भाग में बहुत से अफसरों के बंगले।

(ङ) रायल बाम्बे सैपर्स एण्ड माइनर्स (सफरमैना) के दो बेरेकों के कमरे।

शीघ्र ही नगर में तीन स्थानों पर आग लग गयी। जब तक सबेरा न हो गया उद्धार कार्य का सामूहिक प्रयास न हो सका, किन्तु

सेना के रिकार्डों से पता चलता है कि फौज में, भूकम्पध्वस्त मूक क्वेटा की अपील की सुनवायी किस तत्परता से हुई :—

सेकन्ड इण्डियन डिवीजनल सिगनल्स—भूकम्प के पहले धक्के के आध घंटे के भीतर यह फौज अपनी ही मोटरों द्वारा ध्वस्त नगर में आ पहुंची और काम शुरू कर दिया। उनकी लारी और मोटर साइकिल की बत्तियों से शहर की खास सड़क पर रोशनी फेंकी गयी।

सेकन्ड इण्डियन डिवीजनल इंजीनियर्स—रात के साढ़े तीन बजे रायल बाम्बे सफरमैना की पलटन शहर में आ धमकी।

ट्वेन्टी फोर्थ माउन्टेन ब्रिगेड, रायल आर्टिलरी—एक पार्टी प्रात:काल साढ़े पांच बजे शहर की मुख्य सड़क पर पहुंची और रास्ते की सफाई शुरू कर दी। दूसरी पार्टी सिविल अस्पताल और पुलिस की लाइन्स पहुंची जहां उसके रस्सों ने गिरी हुई छतों को घसीटने में बड़ी मदद दी।

फर्स्ट वेस्ट याकशायर रेजीमेन्ट—पौने चार बजे रात को अफसरों की मोटर गाड़ियों में २० आदमियों ने और ४० बाइसिकिल सवारों ने सिविल लाइन्स में काम शुरू कर दिया। चार बजे आधी कम्पनी नगर की प्रमुख सड़क पर पहुंचा और आग बुझाने में जुट गयी। साढ़े चार बजे एक कम्पनी सिविल अस्पताल पहुंच गयी। बाकी फौज शहर में चली गयी।

सेविन्थ लाइट टैंक कम्पनी—साढ़े चार बजे प्रात:काल सभी लारियां अम्बुलेन्स कार्य के लिए भेज दी गयीं। साढ़े छ: बजे सबेरे कम्पनी ने टैंकों के साथ आर.ए.एफ. लाइन्स में उद्धार कार्य प्रारम्भ कर दिया। कम्पनी का एक उप-विभाग खुदाई के काम के लिए शहर में और दूसरा उपविभाग सिविल लाइन्स में मुर्दा ऊंट और बैलों को हटाने के लिए भेज दिया गया।

फिफ्थ बैटालियन, एट्थ पंजाब रेजीमेन्ट—साढ़े तीन बजे रात को पहली पार्टियां सिविल अस्पताल और सिविल लाइन्स गयीं। सवा चार बजे बाकी बैटालियन शहर चला गया।

फोर्थ बैटालियन, हैदराबाद रेजीमेन्ट—पांच बजकर २० मिनट पर सारा बैटालियन उद्धार कार्य के लिए शहर भेज दिया गया।

फर्स्ट बटालियन, फर्स्थ गुर्खा राइफल्स—पौने चार बजे एक कम्पनी मोटर गाड़ियों से शहर भेज दी गयी। दूसरी कम्पनी पैदल ही पुलिस लाइन्स पहुंच गयी, जहां सवा छः बजे सवेरे बाकी बैटा-लियन भी पहुंच गया।

दि फर्स्ट बैटालियन, दि क्वीन्स रेजीमेन्ट और दि सेकन्ड—इलेवन्थ सिक्ख रेजीमेन्ट क्वेटा से बाहर, रात की ड्यूटी पर थे। उन्हें भूकम्प के गहरे धक्के मालूम हुए और रातों रात उन्होंने २० मील दूरी से छावनी के लिए प्रस्थान किया। सिक्ख रेजीमेन्ट सवेरे साम बजे आर.ए.एफ. लाइन्स पहुंच गया और तात्कालिक सहायता पहुंचायी। क्वीन्स रेजीमेन्ट तुरत सिविल एरिया और शहर पहुंच गयी।

स्पष्टत: सब से बड़ी आवश्यकता स्थानान्तरित करने की थी। सिविल एरिया के प्राइवेट व्यक्तियों की मोटर गाड़ियां चकनाचूर होगयी थीं। आर्मी (सेना) की प्रत्येक लारी और गाड़ी, फौज को ध्वस्त क्षेत्र में लाने में व्यस्त थी। इसके बाद गाड़ियों से अम्बु-लेन्स सहायता, जो ब्रिटिश और इन्डियन मिलिटरी अस्पतालों से प्राप्त हो रही थी, पहुंचायी जाने लगी और घायलों को मिलिटरी अस्पताल पहुंचाया जाने लगा।

सवेरे ६ बजे विनष्ट क्वेटा क्लब के हरे मैदान पर रिलीफ हेड क्वार्टर्स की स्थापना की गयी और गवर्नर जेनरल के एजेन्ट सर नार्मन केटर से परामर्श करके जेनरल कार्सलेक ने अपनी फौज द्वारा उद्धार कार्य के लिये समस्त नगर को निश्चित क्षेत्र में विभक्त कर दिया। सर नार्मन केटर खुद तो बाल-बाल बच निकले लेकिन दुखद हानि से न बच सके। एक प्रकार से उनका पूरा स्टाफ, अफ-सर, सबोर्डिनेट और उनके परिवार या तो मर गये या घायल हो गये। मुल्की शासन का तो यन्त्र ही विच्छिन्न हो गया।

सर नार्मन केटर और जेनरल कार्सलेक के सामने बहुत बड़ा काम था। जिम्मेदारियों और कठिनाइयों से भरी हुई बेजोड़ परि-

स्थिति का सामना था । भूकम्प के बाद प्रातःकाल उनके सामने कैसा गुरुतर कार्य उपस्थित हुआ इसकी कल्पना बाहरी जनता की शक्ति के बाहर है। वे लोग मुर्दों और दम तोड़ते हुए लोगों के बीच में थे। जो लोग बचे थे वे भी भय और दुख से पागल हो रहे थे उनमें हजारों के संगीन चोटें आयी थीं या उनके रिश्तेदार मर चुके थे। ऐसी विकट परिस्थिति में अधिकारियों ने किस प्रकार कार्य किया इसका विस्तृत विवरण दूसरे परिच्छेद में दिया जायेगा।

परिच्छेद ३

अधिकारियों ने परिस्थिति का मुकाबला कैसे किया

पिछले परिच्छेद में हमने संक्षेप में बतलाया है कि ढाई घन्टे के अन्धकार में जिसके बाद ३१ मई का प्रात:काल हुआ, अधिकारियों और क्वेटा गैरिजन ने क्या किया।

३१ मई को ६ बजे तक आदेश निकाल कर बतला दिया गया कि विध्वस्त क्षेत्र में कौन फौज कहां उद्धार कार्य *करेगी। समस्त शहर और सिविल लाइन्स उपविभागों में विभक्त कर दिया गया। चिकित्सा केन्द्रों का प्रबन्ध कर दिया गया, अम्बुलेन्स सर्विस का संगठन भी हो गया। और खुदाई तथा उद्धार कार्य अगले सप्ताह तक अबाध गति से चलता रहा।

इस विषय की विस्तृत विवेचना करने से पहले कुछ महान समस्याओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है जो जेनरल कार्सलेक और उनके स्टाफ के सामने आ उपस्थित हुई थीं। बाह्य जगत से क्वेटा का सम्बन्ध एक पतलीसी छोटी रेलवे लाइन द्वारा किया गया जो सिबी से जा मिली है। ढालू जमीन की रेलवे शाखा में मार्च होते हुए दूरी तक लगभग २० सुरंगें और करीब एक सौ पुल और मोड़ हैं जो सभी भूकम्प के प्रभाव से नष्ट हो सकते थे। हरनाई का जोड़ तो बहुत ही हलका बना हुआ थे और वह भूकम्प के हल्के धक्के से भी टूट जा सकता है। सन १९३१ के भूकम्प में इस रेलवे को बड़ी क्षति उठानी पड़ी थी और उस दिन प्रात:काल अधिकारियों के सामने जो परिस्थिति थी उसके देखते हुए यही अनुमान किया गया कि रेलवे लाइन सम्भवत: टूट गयी होगी।

---

* मान चित्र देखिये

खाद्य पदार्थ और अन्य वस्तुओं के लिए क्वेटा को इसी रेलवे लाइन पर निर्भर करना पड़ता है। इसलिये सब से पहले यही जरूरी समझा गया कि मिलिटरी सप्लाई डिपो में जो खाद्य पदार्थ जमा है उसे सुरक्षित रखा जाए। सब फौजों को राशन देना कम कर दिया गया जिस से कि सिविलियन (गैर फौजी) व्यक्तियों को काफी तादाद में खाने-पीने की चीजें मिल सकें। सप्लाई डिपो ने आश्चर्य जनक रिकार्ड खड़ा कर दिया। प्रकृतिस्थ अवस्था में ४६ भारतीय निम्नस्थ अफसरों में से १० ने ड्यूटी ली। क्वेटा में प्रति दिन के औसत से १०६०० व्यक्तियों को राशन मिलता है। ३१ मई को दिये गये राशन के आंकड़े नहीं मिले, क्योंकि उस दिन का हिसाब नहीं रखा गया। २ जुन को ४५००००व्यक्तियों को, राशन दिया गया, ३ जून को १०२५०० व्यक्तियों को, ४ जून को ६६००० व्यक्तियों को दिया गया। जून के महीने में क्वेटा शहर और जिले में औसतन ४५००० व्यक्तियों को प्रति दिन राशन दिया गया। इसके अलावा १२ दिन में ५०००० गैलन पेट्रोल भी दिया गया। (नोट—प्रकृतिस्थ अवस्था में प्रतिमास १८००० गैलन पेट्रोल लगता है) रेस कोर्स के आश्रितों के लिए १० बजे दिन को राशन रवाना किया जाता था और दोपहर तक उन्हें मिल जाता था। अस्पतालों के लिये दूध, चाय, चीनी और ब्रांडी की जबर्दस्त मांग पूरी की गयी और हिन्दुओं को लाशों की दाह क्रिया के लिए पहले दिन लगभग ३८००० पौंड लकड़ी दी गई।

बेतार के तार को छोड़ कर संवाद भेजने के सभी साधन नष्ट हो गये थे। रायल कार्प्स आफ सिगनल्स ने प्रयत्न करके ८ बजे दिन को स्थानीय संगठन किया। डेढ़ बजे दिन तक उन्होंने सिविल टेलीग्राफ्स की मरम्मत कर डाली जिस से प्राइवेट संवाद प्राप्त होने लगे। थोड़े ही घन्टों में ४४६ संवाद प्राप्त हुये और भेजे गये।

कब्रस्तान के मुकाम चुन कर ठीक किये गये थे। ईसाई लाशें स्टेशन क्रिश्चियन सिमेट्री से और पारसी लाशें पारसी कब्रस्तान में दफनायी गयीं। मुसलमान और हिन्दुओं की लाशें शहर से बाहर तीन स्थानों पर भेजी गयीं। हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सम्प्रदायों की लाशों के अन्तिम की देख-रेख के लिए तीनों सम्प्रदायों के

एक-एक अफसर की अधीनता में कुछ सिपाही तैनात कर दिये गये थे जिस से कि धर्म विरुद्ध अन्तिम संस्कार न होने पाये।

पुलिस दल का भी संगठन किया गया। ज्योंही शहर के रास्ते साफ हो गये इन पुलिस वालों ने यातायात के मार्ग की व्यवस्था की और बचे हुए व्यक्तियों को आश्रितों के कैम्पों का रास्ता बतलाया। इस पुलिस दल में स्टाफ कालेज के छात्र भरती हुए थे। इसके अतिरिक्त लूटपाट रोकने, सार्वजनिक इमारतों, बैंकों, दुकानों आदि की रक्षा करने के लिए पहरेदार और पटरोलों का संगठन भी किया गया था। घुड़ सवारों का भी एक दस्ता बनाया गया जिससे कि नगर में अवांछनीय व्यक्तियों का प्रवेश न हो सके।

भारत से अतिरिक्त डाक्टर बुलवाये गये थे, किन्तु साथ ही स्थानीय दो मिलिटरी अस्पतालों का मेडिकल स्टाफ, जिसमें से कुछ घायल हो गये थे, और फौजी डाक्टरों की सहायता से चिकित्सा कार्य कर रहा था।

सिविल और मिलिटरी अस्पताल नष्ट हो चुके थे। मिलिटरी अस्पतालों के मकानों में दरारें पड़ गयीं जिसके कारण वे अरक्षित हो गये थे, इसलिए बराकों और तम्बुओं में आश्रय लेना पड़ा। स्ट्रेचर और चटाइयों से बिस्तरों का काम लिया गया। प्रातःकाल से पूर्व ही ब्रिटिश अफसरों की लगभग एक सौ स्त्रियों ने अस्पतालों में काम करने की इच्छा प्रकट की। हजारों पीड़ितों की सहायता के लिए उन्होंने किसी काम को भी छोटा या नीच नहीं समझा। इन महिलाओं का, जिन में से अधिकांश ने कटी उंगली से अधिक किसी प्रकार की मरहम पट्टी भी न की होगी इस प्रकार सेवा के लिए अर्पित करना सार्वजनिक कर्तव्य और व्यक्तिगत सेवा के अनेक उदाहरणों में एक है जिसका परिचय इस भीषण परिस्थिति में प्राप्त हुआ। डाक्टरों, नर्सों और स्टाफ की जितनी ही प्रशंसा की जाय थोड़ी है। एक वीर डाक्टर कई घन्टे बाद अपने बंगले के मलबे के नीचे से निकाला गया और बाहर आते ही उसने अपनी सेवाएं अर्पित कर दीं और बिना विश्राम किये लगातार ४८ घन्टे तक काम किया।

उद्धार कार्य का भार अनिवार्यतः डाक्टरी पेशा लोगों पर ही पड़ा और उन्होंने स्थिति के अनुसार काम भी खूब किया। घायलों की

चिकित्सा निम्न स्थानों में की गयी :—

(क) शहर के इमर्जेन्सी फर्स्ट एड पोस्ट्स।

(ख) ब्रिटिश मिलिटरी अस्पताल।

(ग) इण्डियन मिलिटरी अस्पताल।

(घ) कैन्टोनमेन्ट अस्पताल।

(ङ.) रेफ्यूजी कैम्प अस्पताल।

(च) मस्नंग एरिया और कलात एजेंसी।

(छ) क्वेटा क्षेत्र के इर्द-गिर्द के मकान।

समस्त सहायता कार्य सुसंगठित रूप से चल रहा था। डाक्टरों, नर्सों, स्टाफ और वालन्टियरों ने खूब काम किया। सहायता कार्य इतनी अच्छाई से किया गया कि उसकी प्रशन्सा अपने-आप होगी। हमें तो दो एक खास बातों के उल्लेख में सन्तोष हो जायगा। इन्डियन मिलिटरी अस्पताल, जिस में सिर्फ उसी का स्टाफ बाकी बचा था हताहतों का केन्द्र बन गया। ३१ मई को १० बजे दिन तक वहां एक हजार घायल पहुंच गये और फिर तो दिन भर प्रति घन्टे २०० की संख्या में पहुंचते गये। १ जून की शाम तक कुल ४५०० घायल भर्ती किये गये। यद्यपि उक्त अस्पताल भारत वर्ष में सबसे बड़ा है जिस में अधिक से अधिक ६०० बिस्तरों की जगह है, फिर भी घायलों के लिए एक बड़े पैमाने पर प्रबन्ध किया गया। अस्पताल स्टाफ ने अतिरिक्त डाक्टरों और ४५ अफसरों तथा ब्रिटिश सैनिकों की सहायता से बरामदों और तम्बुओं में वार्ड बनाये। इसी एक अस्पताल में ४५० आहतों के बड़े बड़े नश्तर लगाये गये, १२०० व्यक्तियों को सुन्न कर देने वाली दवाएं दी गयीं। और ३०० टूटी हड्डी के रोगियों की चिकित्सा की गयी। एक सार्जन ने चार दिन के भीतर १५७ बड़े बड़े नश्तर लगाये। अनुमान किया जाता है कि भूकम्प के समय ३१ मई से १४ जून तक २०००० से २५००० रोगियों की चिकित्सा की गयी। चूंकि क्वेटा मेडिकल मोबिलाइजेशन स्टोर्स की वस्तुएं प्रचुर परिमाण में प्राप्त हो गयीं और मेडिकल डाइरेक्टरेट की तत्कालीन सहायता भी प्राप्त हो गयी इस लिए आहतों की चिकित्सा के लिए काफी परिमाण में दवाएं और चीरफाड़ के यन्त्र मिल गये।

डाक्टरों ने और भी कई बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियों को निभाया। ये जिम्मेदारियां खास कर ध्वस्त क्षेत्र और कैम्पों की सफाई और संक्रामक रोगों का रोकना था। ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगे आदमी और जानवरों की लाशों के ढेर लगे और खुदाई के समय उन्हें खुली हवा में रखने से चिन्ता पैदा हुई और वे सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए महा भयंकर बन गयीं। किसी प्रकार का संक्रामक रोग नहीं फैला इस से प्रकट है कि अधिकारियों ने प्रभावोत्पादक उपायों से काम लिया।

पानी और रोशनी का प्रबन्ध अत्यावश्यक हो गया। मिलिटरी इंजीनियर सर्विस, इरिगेशन डिपार्टमैंट और क्वेटा इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी का काम बन्द पड़ा था। इनके कर्मचारियों की बहु-संख्या शहर में रहती थी। सिर्फ मिलिटरी इंजीनियर सर्विस के २७ आदमी मर गये।

कमांडिंग रायल इंजीनियर अफसर की अधीनता में सफरमैना पलटन ने काम शुरू किया। उरक से स्टाफ कालेज के ऊपर पानी के हौदों तक १४ मील तक पाइप लाइन कहीं खराब नहीं हुई थी। जिस १० इंची खास नल से शहर को पानी पहुंचाया जाता था वह कई जगह टूट गया था। नलों की मरम्मत करना आसान काम न था क्योंकि छेदों से पानी का निकलना बहुत देर तक बन्द न हुआ और बाद के भूकम्पन से नल नयी-नयी जगहों पर फट जाते थे। पानी के लिए यद्यपि बड़ी चिन्ता की जा रही थी लेकिन कमी कभी भी नहीं पड़ी।

सफरमैना ने क्वेटा इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी पावर हाउस का भार अपने हाथ में लिया, टूटी हुई छत को टेक लगा कर गिरने से बचाया, इंजनों को चालू किया, जितनी अधिक लाइनों की मरम्मत करते बनी, किया और उसी दिन शाम को अस्पतालों में भी बिजली की रोशनी पहुंचा दी।

अब हम क्वेटा आर्सिनल में होने वाले काम की ओर दृष्टिपात करेंगे। क्वेटा आर्सिनल छावनी के दक्षिण-पश्चिम तरफ किले में है। भूकम्प से इसका भी बड़ा नुकसान हुआ। इसके बहुत से स्टोर

गिर पड़े और भारतीय कर्मचारियों में से अधिकांश जो शहर में रहते थे या तो घायल हो गये या मर गये। चीफ आर्डनेंस अफसर ने अपने स्टाफ को तुरंत सज्जित किया। आर्लिनल की दमकल आग बुझाने के लिए शहर भेज दी गयी जो इस समय नन-कमीसन्ड-अफसरों की देख रेख में था। ६ बजे सवेरे से लेकर ८ बजे रात तक स्टाफ ने आवश्यक वस्तुएं बांटीं। १००० खीमें ५०० स्ट्रेचर, ५४०० कम्बल, हजारों की तादाद में फावड़े और गैंती, औज़ार, भट्टियां लैम्पें तथा आकस्मिक अवसर के लिए जो युद्ध सामग्री इकट्ठी की गयी थी वह सब की सब शहर, अस्पताल और कैम्पों में भेज दी गयी,। अतिरिक्त प्रयोजनीय वस्तुओं का तखमीना भी लगाया गया और आर्मी हेड क्वार्टर्स को बेतार के तार द्वारा उसकी सूचना दी गयी जिस ने तुरंत ही मय फोज के सब सामान पहुंचाना शुरू कर दिया।

इस बीच रेस कोर्स और पोलो मैदान में आश्रितों को पहुंचा दिया गया और स्टाफ कालेज के अफसरों ने आश्रितों के लिए एक कैम्प खड़ा कर दिया।

हिन्दु, मुसलमान और एंग्लो इन्डियनों के लिए रसोई, पाखाना अस्पताल और राशन मिलने के स्थान चुने गये। अत्यावश्यक उद्धार कार्य से सिर्फ थोड़े से आदमियों को छुट्टी दी गः लेकिन दोपहर होते-होते आश्रित कैम्प का ढड्ढर तैयार हो गया और आश्रितों के पहले जत्थे के लिए आवश्यक प्रबन्ध भी पूरा कर लिया गया। पहले दिन २००० हजार व्यक्तियों को पका-पकाया भोजन दिया गया और ८०० कम्बल बांटे गये। पहली जून को कैम्प में १५००० व्यक्तियों को राशन बांटा गया और बाद के दिनों में तो कैम्प में आश्रितों की संख्या बढती ही गयी। पास-पड़ोस के गावों के तहसीलदार, स्वयंसेवक और स्थानीय हालचाल की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के पहुंचने से बड़ी सहायता मिली। उन्होंने बड़े परिश्रम से सेवा-सहायता की। बाद में तो फिर खेल कूद और क्रीड़ा-कौतुक का प्रबन्ध किया गया और सिनेमा भी तैयार हो गया। इन सबसे थोड़ा सा यह लाभ हुआ, कि भूकम्प पीड़ित गरीबों का

ध्यान उस महासंकट की ओर से जो उन पर पड़ा था, फिर गया।

शहर के इन आश्रितों के अतिरिक्त १२ गावों के निवासियों को भी भोजन और वस्त्र दिये गये।

उस दिन उद्धार और सहायता के लिये और क्या २ काम हो रहा था इसके लिखने को तो स्थान ही नहीं। आकस्मिक बाढ़ से रक्षा करने, बन्द पानी को टूटी हुई नालियों के रास्ते बहाने, सड़कें, पुल, रेलवे की मरम्मत करने, शहर के खतरनाक पेट्रोल के पम्पों को खाली करने और माल-असबाब ठीक करने के सन्दूकों से टूटी हुई हड्डी जोड़ने के लिए ढांचे तैयार करने का काम जोरों के साथ किया गया। हम लोगों के लिये यही बतलाना काफी होगा कि एक बहुत ही सुयोग्य और निपुण सेना की सारी शक्ति विध्वस्त क्षेत्र में जान-माल की रक्षा में लगा दी गयी थी।

परिच्छेद ४

विध्वस्त क्षेत्रों में सहायता और उद्धार कार्य

सिविल स्टेशन और शहर के विध्वस्त क्षेत्र के उद्धार कार्य के वर्णन किस स्थान से प्रारम्भ किया जाय यह मालूम करना कठिन है। तीसरे परिच्छेद में हम लोगों ने देखा है कि आवागमन, स्वागत, भोजन, वस्त्र और बचे हुए तथा घायलों के उपचार के लिए वेस्टर्न कमांड के हेड क्वार्टर्स ने क्या किया और बिलोचिस्तान डिस्ट्रिक्ट ने किस प्रकार औषधीय तथा अन्य प्रकार की सेवा और सहायता की। साथ ही लड़ने वाली फौजें, पीड़ितों को बचाने, शहर खाली करने और घायलों को मलबे के नीचे से खोदने में व्यस्त थीं।

३१ मई से सोमवार ३ जून की शाम तक रात दिन काम होता रहा। आश्रितों को शहर में चलने और अपने घरों की शिनाख्त करने को प्रोत्साहित किया गया। खोदने वाली पार्टियां भेजी गयीं और जीवित व्यक्तियों को खोद निकालने के सब प्रयत्न किये गये।

प्राप्त सम्पत्ति को उसके मालिकों को सौंप दिया गया और जिस सम्पत्ति के दावेदार न मिले उसे तफसीलवार लिख कर सुरक्षित स्थान में रखवा दिया गया। ३ जून की शाम को शहर में ऐसी कड़ी दुर्गन्ध उड़ी जो असह्य और खतरनाक हो उठी और डाक्टरों के परामर्श से एक बड़े पैमाने पर होने वाला काम बन्द कर दिया गया। ५ और ६ जून को शहर खाली कर डाला गया और आश्रितों को रेस कोर्स कैम्प में पहुंचा दिया गया। पतरोल अभी खोज जारी किये हुए थे। वे खण्डहरों की ओर कान लगाते थे कि कहीं जीवित व्यक्ति की आवाज सुनाई पड़े तो उसे निकाल लिया जाय। किन्तु ७ जून की शाम को यह तय पाया गया कि क्वेटा अब मुर्दों का ही शहर है। इस में कोई सन्देह नहीं कि जोरदार उद्धार कार्य के समय, खास कर पहले ३६ घन्टों में प्रत्येक जीवित व्यक्ति को खींच लिया गया जिसमें कभी-कभी उद्धार कार्य करनेवालों को अपनी जान को भी जोखिम में डालना पड़ा।

शनिवार की रात के बाद यही सोचा गया कि अब सम्भवत; शहर में कोई व्यक्ति जीवित न बचा होगा और यह करुणोत्पादक तथ्य उस समय और भी स्पष्ट हो गया जबकि सप्ताहान्त में खोदने से केवल लाशें ही निकलीं। एक प्रत्यक्षदर्शी का कहना है कि उद्धार कार्य होने वाली अवधि में प्रत्येक जीवित व्यक्ति के पीछे ९ लाशें निकलती थीं।

इस अवधि में सम्पत्ति उद्धार के लिए फौजी दस्तों द्वारा जो काम किये गये उनके सम्बन्ध में दस्तों की ही डायरियां देखनी चाहिये। जैसी परिस्थिति में ये डायरियां भरी गयी हैं,स्वभावत: वे ठीक वैसी ही हो गयी हैं जैसे जल्दी २ में कुछ लिख लिया जाय,जो, कुछ तो उसी वक्त नोट कर लिया जाय और कुछ बाद में सोच। सोच कर लिखा जाय, इन डायरियों में, कोई भी, प्रकाशित कराने के उद्देश्य से नही लिखी गयी। काम इतना आवश्यक, इतना महत्व पूर्ण और इतना विशाल था कि किरानी के से कागजात नहीं बन सकते थे। हां उन लाशों और खोदी गयी, सम्पति की जिनकी शिनाख्त नहीं हो सकी लिखा पढ़ी अवश्य हुई है।

जो कुछ भी हो फौज की डायरियों के कुछ उदाहरण बड़े ही दिलचस्प हैं। उन पंक्तियों के पढ़ते समय स्पष्ट मालूम हो जायगा कि फौज के महाकार्य के प्रति क्वेटा के जीवित व्यक्ति कितने ऋणी हैं और किस प्रकार वे उसके महत्व को स्वीकार करते हैं।

एक ब्रिटिश बैटालियन-"भूकम्प के थोड़ी ही देर बाद जो ३१ मई को ०३.०५ बजे हुआ क्वेटा शहर की तरफ आग लगने का दृश्य दिखायी दिया। क्वेटा शहर की हानि का निश्चय करने और उसकी रिपोर्ट देने के लिए मोटर गाड़ियों द्वारा अफसर भेजे गये। उसके साथ ही भावी दुर्घटना का मुकाबला करने के लिए बैटालियन को वर्दी पहनने और हथियार उठाने का हुक्म दिया गया।

मैं मि०..............................आई.सी.एस. से ०४.०० बजे के कुछ पहले डाकखाने के पास मिला और उन्होंने तथा उनके सहकारियों ने जो उद्धार कार्य कर रहे थे, मुझ से सम्पत्ति रक्षा और लूटपाट रोकने के लिए शहर में पहरा लगाने का प्रबन्ध करने के लिए कहा।

०४.०० बजे "ए" कम्पनी के ८० आदमी मेजर .... के मातहत लारी द्वारा पहुंचे और उन्हें सम्पति रक्षा, लूटपाट रोकने और साथ ही यथा सम्भव आग बुझाने के लिए क्रास रोड और शहर में गश्त लगाने का काम दिया गया।

लारियां बाकी "ए" और "बी" कम्पनियों के लिए लौटा दी गयीं। इसके बाद "सी" कम्पनी और "एच.क्यू." विंग ने भी इनका अनुसरण किया और इन्हें तुरन्त उद्धार कार्य के लिए भेज दिया गया। "सी" कम्पनी को सिविल अस्पताल भेज दिया गया।

"एम" (एस) कम्पनी रिजर्व की हैसियत से आदेश की प्रतीक्षा में और स्थिति के साफ होने के लिए बैरकों में ही रुकी रही।

शहर में इन लोगों के पहुंचते ही चारों तरफ से सहायता की पुकार आने लगी और जहां तक मानव शक्ति द्वारा सम्भव था, सहायता पहुंचायी गयी।

शहर के निरीक्षण के समय सर नार्मन केहर और मि० .... के साथ क्रमशः अफसर और एसकोर्ट गये।"

"शहर से सैन्डेमान हाल के पूरब तरफ शेलफोर्ड रोड—क्रास रोड—प्रिन्स रोड और मैकलोनाघे रोड का दृश्य और स्थिति बटालियन के पहुंचने पर बड़ी ही भीषण थी। हष्ट पुष्ट आदमी बहुत थोड़े मिल सके लेकिन उस भीषण संकट की मार से जीवन पर, उनके परिवार पर और सम्पत्ति पर पड़ी वे इतने उदास हो रहे थे कि वे मेरे सहायता कार्य में किसी प्रकार की शारीरिक सहायता न दे सके।

हर एक मकान चकनाचूर हो गया था और सड़कों का पता लगाना मुश्किल ही नहीं बल्कि कहीं कहीं असम्भव हो रहा था।

बहुत से मुर्दे और घायल व्यक्ति दिखायी पड़ते थे। कुछ के शरीर का थोड़ा सा भाग मलबे में दबा था। इसके अतिरिक्त चारों तरफ से जिन्दा आदमियों को मलबे से बाहर निकालने की आवाजें बहुधा काफी गहराई से आ रही थीं।

३१ मई को यद्यपि बहु संख्यक आदमियों ने दूसरे इलाकों में मलबे से जीवित व्यक्तियों का उद्धार करने का काम पूरी मिहनत

के साथ चार घन्टे से अधिक किया था फिर भी ये लोग बिना थकान की शिकायत हुए सारा दिन, बल्कि रात तक काम करते रहे और फिर भी इनमें से कुछ आदमी जिनको पता चला कि किसी जगह कोई आदमी मलबे में दबा हुआ है उन्होंने दम लेने से इन्कार कर दिया और रात बीते तक बराबर काम करते रहे।

एक रोचक बात यह बतायी जाती है कि सरसरी तौर पर मौके पर जो अनुमान किया जा सका उससे मालूम हुआ कि जिन घायलों का उद्धार किया गया (अक्सर खोद कर) और जो बिना चोट खाये खोदने पर निकल आये, उनकी संख्या ८६० थी।

जितनी लाशें निकाली गयीं उनकी संख्या लगभग १९५० थी।

ये आंकड़े केवल शहर के इलाके के हैं। और २१ मई को प्रातः काल जो काम हुआ उसमें जितने जिन्दा और मुर्दा आदमी बरामद हुए वे इसमें शामिल नहीं हैं, इसलिए कि उनका हिसाब रखना सम्भव न था।

एक इन्डियन बैटालियन—"यह बैटालियन ५ बज कर २० मिनट पर सुबह को ब्रस रोड पहुंचा और कर्नल...........को अपनी हाजिरी की रिपोर्ट दी। एक कम्पनी हलका बांध कर ब्रस रोड से ऊपर थोपरा टाकी तक तैनात कर दी गयी। बैटालियन के बाकी आदमी ब्रस रोड को साफ करके रास्ता बनाने में लगा दिये गये।

साढ़े ६ बजे प्रातःकाल ब्रूसरोड एक तरफ से सवारियों के आने जाने के लिए साफ हो गया। छोटी छोटी पार्टियां ब्रस रोड पर आग बुझाने में भी लगायी गयीं। इसके बाद सारे आदमी मलबे से जिन्दा आदमियों को निकालने और जख्मियों को ब्रस रोड और सैन्डमान रोड के चौराहों पर पहुँचाने में लगा दिये गये। यह काम लगातार साढ़े ११ बजे दिन तक जारी रहा।

साढ़े ११ बजे बैटालियन जमा करके नम्बर......हल्के को भेजी गयी जो इसी के सुपुर्द किया गया था और वहां इसने निम्न लिखित कार्य किया:—

(क) तीन बड़ी २ सड़कें साफ की गयीं।

(ख) इस हल्के के जिन्दा आदमियों को जमा करके अस्पताल पहुँचा दिया गया।

(ग) मुर्दों को जमा किया गया और ए.सी. गाड़ियों में दफनाने की जगहों पर पहुंचा दिया गया।

(घ) गिरे हुए मकानों से मुर्दा और जिन्दा आदमी खोद कर निकाले गये।

(ङ) छोटी-छोटी चोरियां रोकी गयीं और कई लुटेरों को पकड़ा गया। दिन भर में लगभग ऐसे ५० आदमी पकड़े गये।

यह सब काम दिन भर होता रहा।

८ बजे रात को सारे हल्के में पहरे बिठाये गये ताकि वे लूट पाट रोकें। मलबा खोद कर जिन्दा आदमियों निकालने में कुछ पार्टियां सारी रात जुटी रहीं।

१ जून—उपरोक्त उद्धार और सहायता कार्य सारे दिन जारी रहा। यह बताना रोचक होगा कि काम करने वालों को आराम करने का मौका नहीं मिला। जितने आदमी मिल सके वे सबके सब २४ घण्टे लगातार काम पर लगे रहे जिस से कि अधिक से अधिक जिन्दा आदमियों को मलवे से निकाला जा सके। सारे आदमियों ने बहुत ही अच्छा काम किया और जब मौका लगता था तो जरा कुछ खा लेते थे।

रात को हमारे हल्के में पहरे की पार्टियां और काम करने वालों की पार्टियां लगातार काम करती रहीं।

२ जून—निम्न कार्य किये गये:—

(क) उन स्थानों की खुदाई की गई जहां किसी व्यक्ति ने किसी जिन्दा आदमी के दबे होने का संकेत दिया।

(ख) तमाम मुर्दा जानवरों को मिट्टी या मलवे में दफन किया गया।

(ग) आदमियों की लाशों को ए.सी. गाड़ियों में कब्रस्तान भेज दिया गया।

(घ) समस्त आश्रितों को रेसकोर्स रवाना किया गया।

(ङ) घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। रात को पिछली रात की तरह काम हुआ।

अब और अधिक उद्धरण देने की आवश्यकता नहीं है।

आठ हल्कों में जिन में जेनरल कार्सलेक ने अपनी फौजों को

तैनात किया था वही काम अथक परिश्रम, योग्यता और सैनिक नियमों के साथ होता रहा।

कहा जाता है कि यदि स्वयंसेवक सहायता दलों को क्वेटे जाने की आज्ञा दी जाती तो अधिक व्यक्तियों के प्राण बच गये होते। इसके लिए हमें तथ्यों का विवेचन करना चाहिए। यह स्पष्ट है कि भूकम्प के बाद पहले ४८ घन्टे बड़े ही संगीन थे और इन दो दिनों के बाद गिरे हुए मकानों के नीचे जिन्दा आदमियों के होने की सम्भावना शीघ्रता के साथ कम होती गयी। यदि फौज के काम से दबे हुए आदमियों को इस कठिन काल के भीतर शीघ्रता से बाहरी सहायता मिल सकती तो अवश्य ही उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया जाता। लाहौर से ५० वालन्टर अपने उत्साही नेता मि० हाग के नेतृत्व में, और सिन्ध के कुछ डाक्टर निस्सन्देह शीघ्रता पूर्वक पहुंचे और उन्होंने अच्छी सेवा की। क्वेटे में स्थानीय मजदूरों की फौज भर्ती की गयी और उसने अत्यन्त उत्तमता से कार्य किया। पूरे ३ दिन बीत जाने पर (२ जून को)जबकिभूकम्प का एक बहुत ही जोरदार धक्का आया और उस रोज से बाहर से आने वाले लोगों पर क्रियात्मक प्रतिबन्ध लगाया गया। इस प्रश्न पर विस्तार से अगले परिच्छेद में विचार किया गया है। फिर भी यहां यह बता देना उचित होगा कि सबसे पहला प्रार्थना पत्र किसी राजनीतिक संघ की ओर से सहायता कार्य के लिये भूकम्प के कई दिन बाद आया। यदि आज्ञा दे भी दी जाती तो यह सहायता करने वाली पार्टियां, और कई दिन बाद पहुंचती और एक आदमी की भी जान न बचा सकतीं। स्थानाभाव के कारण रिपोर्टों पर विस्तृत विचार नहीं किया जा सकता। किन्तु १ जून से १४ जून तक प्राप्त सूत्रों से घटनाओं के जो विवरण मिले हैं उनका मोटा-मोटी उल्लेख सम्भवतः रोचक होगा। १ जून—तलाशी, खुदाई और शहर खाली कराने का काम जारी रहा। २१०० मन जलाने की लकड़ी हिन्दुओं की लाशों को जलाने को दी गयी। आश्रितों का कैम्प तैयार किया गया। बाहर के गांवों का निरीक्षण किया गया और वहां की परिस्थिति के अनुसार कार्य करने के लिए एक दल स्थापित कर दिया गया। सफरमैना की फौज ने रेलवे लाइन की मरम्मत की। बाहरी दुनिया के साथ तार का सम्बन्ध स्थापित किया गया (उसी दिन शाम को जेनरल कार्सलेक ने टेलीफोन द्वारा कन्धन से

शत चीज की) गैलफ्रैंथस्टिनी में सामान्य रूप से सरकारी दुग्ध-शाला तैयार कर ली गयी जिस से अवश्यकतानुसार दूध मिलता रहा। रात भर प्राण रक्षा का काम होता रहा। चमन रोड पर घुड़सवार फौज ने लुटेरों को मार भगाया। रायल एयर 'फोर्स' के २५ हवाई जहाज और वायसराय महोदय का हवाई जहाज भारत-वर्ष के नाना भागों से डाक्टरों, नर्सों और औषधियों व दूध लिए हुए पहुंच गया।

२ जून—खुदाई, तलाशी और शहर खाली करने का काम होता रहा। शाम को चार बजे तक कुछ जिन्दा आदमियों को खोद निकाला गया आश्रितों को ६ ट्रेनों में भर कर क्वेटा से बाहर भेजा गया। पास पड़ोस के गावों को ७ दिन के लिए राशन दिया गया और मस्तंग के लिए १०००हजार व्यक्तियों का राशन दियागया। दिन के २ बज कर ५० मिनट पर भूकम्प का फिर भीषण धक्का लगा जिसने रेलवे लाइन और टेलीग्राफ ट्रंक लाइन को तोड़ डाला। रेलवे के सम्बन्ध में रिपोर्ट देने के लिए हवाई जहाज बोलन दर्रे में उड़ाया गया। आर.ए.एफ. के सात हवाई जहाजों ने घायलों को देशावर पहुंचाया। रिलीफ ट्रेनें सैकड़ों अनधिकृत यात्रियों को ले कर पहुंच गयी जिन के लिए भोजन और निवासस्थान का अभाव था। मजदूरों की फौज संगठित की गयी। शाम के वक्त सारी फौजों ने शहर को अच्छी तरह छान डाला और जो आदमी मिले उन्हें बाहर भेज दिया गया। सिर्फ पहरेदार और फौजी दस्तों की रिलीफ पार्टियां रह गयीं। दुर्गन्ध असह्य हो रही थी।

३ जून—तलाशी, खुदाई और सम्पत्ति उद्धार का कार्य होता रहा। गैस के मुखड़ों के बिना काम करना असम्भव हो गया। आश्रितों की तीन ट्रेनें रवाना की गयीं। आर.ए.एफ. के २६ हवाई जहाज नर्सों सामान और दूध के साथ आ पहुंचे। हवाई जहाज द्वारा माल की ढुलाई जारी की गयी। हन्ना वेली के निवासियों को राशन पहुंचाया गया। रात को कड़ी दुर्गन्ध के कारण शहर बन्द कर दिया गया और उसके चारों तरफ फौज का घेरा डाल दिया गया।

४ जून—मजदूरों की फौज और सम्पत्ति के मालिकों की सहायता से सम्पत्ति उद्धार का नियमित कार्य प्रारम्भ हुआ। रेस कोर्स

कैम्प में आश्रितों की संख्या २३ हजार हो गयी। वायसराय महोदय का हवाई जहाज चिकित्सा सामग्री ले आया और आर.ए.एफ. के ५ हवाई जहाज एक डाक्टर और २५०० पौन्ड चिकित्सा सामग्री लाये। ५ ट्रेनों द्वारा आश्रितों को बाहर भेजा गया। शहर के पास के कासी और नवेरी गावों को खाली कराने का हुक्म दिया गया। यह स्वास्थ्य रक्षा और लूटपाट रोकने के लिए किया गया।

५ जून—आश्रितों की खोज के लिए पलटनें घूमते रहे। सिविल लाइन्स, इम्पीरियल बैंक, ग्रिन्डले बैंक और पंजाब नेशनल बैंक की सम्पत्ति की खुदायी की गयी। आश्रितों के पत्र व्यवहार के लिए कैम्प में एक ब्यूरो खोला गया। रजमक से फोर्ड अम्बुलेन्स के दो दस्ते और दो लेडी वालन्टियर मरहम के लिए रवाना हुईं।

६ जून—शहर में गश्त का प्रबन्ध किया गया और सिविल लाइन्स में सम्पत्ति उद्धार का काम जारी रहा। १४००० आश्रितों को स्पेशल ट्रेनों से बाहर भेजा गया। मार्शल ला के अनुसार पहला चार्ज लगाया गया, एक भारतीय को औरत भगाने के कारण सजा दी गयी।

७ जून—सम्पति उद्धार का काम छावनी के बंगलों तक बढ़ गया। रेस कोर्स कैम्प में सिर्फ थोड़े ही आश्रित बाकी बचे। घुड़ सवार फौज ने रिपोर्ट दी कि बहुसंख्यक कबीले वाले शहर में घुसने की कोशिश कर रहे हैं। उनको रोकने के लिए टैंकों के दस्ते भेजे गये। काफी गश्त लगाने से मालूम हुआ कि शहर में एक भी व्यक्ति अब जीवित नहीं है।

८ जून—शहर में पंजाब नेशनल बैंक की खुदाई की गयी। सरकारी खजाने और दूसरी इमारतों के मलवे से पैदल फौज और टैंक अब भी कागजात खोद रहे थे। लाहौर के लिए अम्बुलेन्स ट्रेन रवाना की गयी।

९ जून—अवस्था प्रकृतिस्थ हो रही है। ब्रिटिश और दूसरी श्रेणी के परिवारों को क्वेटा से बाहर भेजा गया। आम्बुलेन्स ट्रेन कराची के लिए रवाना हुई। भूकम्प कमिश्नर नियुक्त किया गया।

१० जून—पड़ोस के गावों में खुदाई के काम में सहायता पहुंचाने के लिए फौज और टैंक भेजे गये।

११, १२, १३ और १४ जून—सिविल लाइन्स में सम्पत्ति उद्धार का काम जारी रहा। १४ जून को दो अम्बुलेन्स ट्रेनें लाहौर और करांची के लिए रवाना की गयीं और इस प्रकार भारतीय हताहतों को पूरी तरह से क्वेटा से बाहर भेज दिया गया। रेस कोर्स कैम्प में ३००० आश्रित ही बाकी रहे जो खाली करने को राजी न थे।

*　　　*　　　*

इस सार सूचना द्वारा उस अवधि का वर्णन समाप्त हो गया जिसे "महत् कार्य" कह सकते हैं। इस पखवारे में कुल लगभग ३३००० आश्रित क्वेटा से बाहर भेजे गये।

आरम्भ से ही समाचारपत्रों को सारी सुविधाएं प्राप्त थीं। किसी भी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संवाददाता को दरखास्त देने पर, क्वेटा प्रवेश से विमुख नहीं किया गया। छः भारतीय समाचार-पत्रों (जो अंगरेजी भाषा में छपते हैं) और ७ देशी भाषा के समाचार पत्रों के प्रतिनिधि क्वेटा गये थे।

इसके अतिरिक्त भूकम्प के बाद ही भारतसरकार ने समाचार-पत्रों के संवाददाताओं के कार्य को सुगम बनाने और इस बात का निश्चय करने, कि जनसाधारण को यथासाध्य पूरी खबरें मिल रही हैं, डाइरेक्टर आफ पब्लिक इन्फार्मेशन को क्वेटा भेजा (जहां वे ३ जून को पहुंच गये।) स्थानीय अधिकारियों की सहायता से उनके ही प्रबन्ध से ६००० भारतीय हताहतों की सूची निकाली गयी जो समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई।

उद्धार कार्य के उस महान सप्ताह के सम्बन्ध में जन-साधारण में हताहतों की फेहरिस्त प्रकाशित करने के सम्बन्ध में कुछ प्रतिकूल आलोचना हुई है। किन्तु वस्तुस्थिति की अज्ञानता में ही ऐसा हुआ है। कहा गया है कि ब्रिटिश मृतकों की फेहरिस्त पहले प्रकाशित की गई और मृत भारतीयों की बाद में, अंगरेजों की लाशें शिनाख्त करने में भारतीयों की लाशें पहचानने की अपेक्षा अधिक सावधानी रखी गयी और सचमुच पीड़ित अंगरेजों के उद्धार में भारतीयों के उद्धार की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया गया, जबकि इस परस्पर के महासंकट में इन अभियोगों पर कभी भी विश्वास न किया जायगा।

हताहतों की फेहरिस्त के सम्बन्ध में जो लोग इस उपाख्यान को पढ़ेंगे उन्हें साफ मालूम हो जाएगा कि तीन चौथाई वर्ग मील में मकानों के ध्वंसावशेष में, जो पहले से क्वेटा नगर के रूप में था, मृत भारतीयों की शिनाख्त करना, वह भी सिविल अधिकारियों की अनुपस्थिति में और म्युनिस्पैल्टी के सारे कागजातों के गायब होने पर, असम्भव था। जब फेहरिस्तें प्रकाशित की गयीं तो उन्हें देखने से पता चलता था कि उन्हें एकदम ठीक प्रकाशित करने में अधिक से अधिक कष्ट और सावधानी की गयी है।

एक छोटे से समुदाय के हताहत अंगरेजों की संख्या, खास कर उन्हें ड्यूटी पर तैनात करने के लिये पुकारने पर, स्वाभाविक रूप से उन के मित्रों, पड़ोसियों और नौकरों को मालूम हो गयी और उसकी रिपोर्ट भी तुरन्त हो गयी।

एक असाधारण अभियोग यह है कि उद्धार कार्य में भारतीयों को वे सुविधाएं नहीं मिलीं जिनके वे हकदार थे और यदि देश के विभिन्न भागों से स्वयं सेवक दल जाने पाते तो अधिक लोगों की जानें बचतीं।

किन्तु इस परिच्छेद में घटनावली का जो वृतान्त दिया गया है उस से इन अभियोगों का खण्डन हो जाता है। विश्वास नहीं किया जा सकता कि ऐसा अभियोग भी लगाया गया होगा।

परिच्छेद ५

क्वेटे से बाहर सहायता कार्य

३१ मई और १ जून को अफसरों ने दौरा करके मालूम किया कि क्वेटे की दक्षिण ओर के जिले के गावों को भूकम्प से विशेष क्षति हुई है। बहुत से तो गिरकर बिलकुल जमीन के बराबर हो गये और बाकी इस प्रकार हिल गये हैं कि निवासियों ने उन स्थानों को छोड़ कर खुले मैदानों में रहने लगे हैं। तखमीना लगाया जाता है कि खरियाब, बलेली, कच्लाग, मोहिसार, दर्रानी और कांसी में, जिन की कुल आबादी लगभग १७३०० थी उनमें ३१५० मर गये और लगभग १२०० घायल हो गये। क्वेटा के उत्तर तरफ हानि तो कम हुई है अलबत्ता क्वेटा का बाजार नष्ट हो जाने से लोग खाने-पीने की चीजों की कमी से परेशान थे।

सहायता कार्य का तुरंत प्रारम्भ कर दिया गया। डाक्टर, आवश्यक वस्तुओं के साथ गावों में गये और वहां से ज्यादा घायल हुए आदमियों को क्वेटा के अस्पताल के लिए रवाना कर दिया। २ जून को विध्वस्त ग्रामों के निवासियों को सात दिन के लिए खाने-पीने की चीजें पहुंचा दी गयीं। थोड़े ही दिन के भीतर मुल्की अफसरों ने रासन पहुंचाने का संघ स्थापित कर दिया जिस ने बड़ा ही सन्तोष जनक काम किया। सफाई और खास कर साफ पानी पहुंचाने और मुर्दा जानवरों की लाशें हटाने का प्रबन्ध उचित ढंग से कर दिया गया।

कलात स्टेट में २००० से ऊपर मरे और लगभग १६०० घायल हुए हैं। मस्तुंग में सबसे अधिक हानि हुई है और १७३६ व्यक्ति मर गये लेकिन खुद कलात कस्बे में, जो भूकम्प क्षेत्र के किनारे है, अपेक्षाकृत कम हानि हुई है। अर्थात १५० मरे और ५० घायल हुए हैं। लेकिन हिज हाइनेस कलात के खान की प्रार्थना पर घायलों की चिकित्सा की वस्तुएं, भोजन और छोलदारियां उनके विध्वस्त गावों को जल्दी के साथ भेज दी गयीं। हिज हाइनेस ने यह भी सूचित कर

दिया कि बाहरी सहायता समितियों से उल्टी परेशानी होगी। रजमाक से फौजी अम्बुलेंस के दो दस्ते मस्तंग भेज दिये गये जिनके साथ दो स्वयं सेवक महिलाएं भी पर्देवाली औरतों के लिए थीं (यह यात्रा असाधारण शीघ्रता के साथ की गयी और इससे सीमा प्रांत के आवागमन के उत्तम साधन का एक उदाहरण मिल गया)। इस अस्पताल ने मस्तंग और आस-पास के गावों में अत्यन्त सुन्दरता से चिकित्सा कार्य किया। सिखों की एक पार्टी, जो ईरान से लारी पर वापस आ रही थी, संयोग से भूकम्प के थोड़ी ही देर बाद मस्तंग पहुंची और उसने घायलों को मलवे से निकालने में बड़ी ही सहायता की। चूंकि ये लोग यहां की भाषा न समझते थे और स्थानीय परिस्थितियों से अपरिचित थे, साथ ही इन्हें भी राशन देने की आवश्यकता थी, इसलिए ये एक प्रकार से स्थानीय अधिकारियों के लिए, जो अब तक स्थानीय निवासियों की सहायता से अपना प्रबन्ध ठीक कर चुके थे, बोझ बन गये। लेकिन यह बात उल्लेखनीय है कि उनका ऐन मौके पर वहां पहुंच जाना और हृदय से सहायता कार्य में जुट जाना अत्यन्त प्रशंसनीय था।

बोलन दर्रे के सिरे पर सिबी, यात्रियों का देख भाल का स्थान बनाया गया। ३१ मई को पांच सौ और १ जून को लगभग दो हजार यात्री इधर से क्वेटा को गये। परिस्थिति संगीन थी। सिर्फ क्वेटे के अफसर आने वालों की अधिकता के खतरे को समझ सकते थे। भूकम्प के धक्के अब भी जब तब आ रहे थे जिससे पानी कम पड़ने का भी थोड़ा बहुत मिलता था और रेलवे लाइन को खतरा था। डिब्बे और इंजन जितने मिल सकते थे वे सब भोजन का सामान पहुंचाने और आदमियों से क्वेटा खाली कराने के काम में लाये गये। संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा हमेशा बना था। पिछले परिच्छेदों से स्पष्ट हो चुका है कि क्वेटे में सबसे अधिक जिस वस्तु की आवश्यकता थी वह यह थी कि अवांछनीय व्यक्ति को भोजन न मिले। इस लिए इस बिना पर यह रास्ता रोक दिया गया और केवल उन्हीं लोगों को जाने की आज्ञा दी गयी जो सरकारी काम से जाना चाहते थे। ४ जून से २८ जून तक शहर में फौज ने देखभाल की। इस बीच सरकारी तौर पर १४१ पास दिये गये। ये सब समाचार पत्रों के संवाददाताओं, सिनेमा, कम्पनियों, डाक्टरों

फौजी ठेकेदारों, सरकारी अफसरों और ड्यूटी पर तैनात अफसरों और उनके नौकरों को मिले।

*　　*　　*　　*

तात्कालिक सहायता कार्य के इस क्षेत्र से अब हम बाइबिल की कहावत के अनुसार अपनी दृष्टि पहाड़ों की ओर डालते हैं।

भूकम्प का पहला संवाद शिमले में ३१ मई को प्रातःकाल बेतार द्वारा पहुंचा। स्वाभाविक रूप से सूचना बहुत ही संक्षिप्त थी लेकिन इस अपर्याप्त संवाद से भी यह अनुमान किया गया था कि बड़ा ही भीषण संकट आ उपस्थित हुआ है। भारत सरकार की स्वीकृति से कमांडर-इन-चीफ ने भारतवर्ष की फौज की तमाम सेवायें भूकम्प पीड़ित क्वेटा की सहायता के लिए प्रदान कीं। कोई प्रयत्न बाकी न रहा। अफसरों, नर्सों और चिकित्सा की वस्तुओं को हवाई जहाज द्वारा रवाना करने का प्रबन्ध तुरन्त किया गया। प्रारम्भिक थोड़े दिनों में १४ डाक्टर, १६ नर्सें इन्डियन मेडिकल डिपार्टमेंट के १२ सदस्य और १२० अर्दली क्वेटे रवाना किये गये। वजीरिस्तान से फौजी अस्पताल के तीन दस्ते और ईस्टर्न कमांड के २ हवाई दस्ते बिलोचिस्तान भेज दिये गये। औषधि व उपचार सम्बन्धी ६ टन सामान भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों से पहुंचाया गया।

यह बात बड़ी शीघ्रता से स्पष्ट हो गयी कि क्वेटे के फौजी अफसर तात्कालिक आवश्यकता के प्रबन्ध में पूरी तरह से व्यस्त हैं। इसलिये इस बात की अत्यन्त आवश्यकता हुई कि बाहर के तमाम सहायता सम्बन्धी और द्रव्य दान सम्बन्धी प्रबन्धों को सामूहिक रूप दिया जाय। यह काम अजीटन-जेनरल साहिब की शाखा ने किया। जो प्रबन्ध आवश्यक थे वे ये थे:—(क) क्वेटा प्रवेश का नियन्त्रण। नियन्त्रण प्रबन्ध (जैसा कि ऊपर बताया गया है) क्रियात्मक रूप दिया गया और पास जारी किये गये (ख) शहर खाली कराने के प्रबन्ध का सारा दायित्व फौजी अफसरों ने अपने ऊपर लेलिया और तमाम फौजी अस्पताली ट्रेनें जो मिल सकीं इस काम में लगा दी गयीं, जिन्होंने फौजी और गैर फौजी हताहतों के लिए काम किया। तमाम सिविल अधिकारियों के

सहयोग से इस प्रकार के प्रबन्ध किये गये कि फौज ने आहतों और आश्रितों को निर्दिष्ट स्थानों पर पहुंचाने और सिविल-अधिकारियों के सुपुर्द करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेली और उन स्थानों पर पहुंच कर सिविल अफसरों ने उन्हें उतारने और इलाज व ठहराने का प्रबन्ध अपने ऊपर लिया। (ग) आर्मी हैड कार्टर्स में एक ऐसा विभाग खोला गया जिसका नाम कैजुएलिटी ब्यूरो यानी इताहतों का पता देने वाला दफ्तर था और उसने अपने जिम्मे यह कठिन काम लिया कि फौजी और गैर फौजी इताहतों के सम्बन्ध में जो खबरें मिलें उन की जांच करे और उनके रिश्तेदारों को सूचित करने और समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिए फेहरिस्तें तैयार करे। बाद को जब सिविल और रेलवे के कर्मचारी अपना-अपना काम शुरू करने लायक हुए तो उन्होंने अपने-अपने कर्मचारियों की फेहरिस्त तैयार कीं। इसके अतिरिक्त उस ब्यूरो ने सम्बन्धियों के हजारों पूछताछ सम्बन्धी पत्रों का उत्तर दिया और जो कुछ पूछा गया उसका जवाब जांच करके दिया। (घ) जालन्धर में एक हजार मजदूरों का एक दस्ता भर्ती किया गया।

क्वार्टर मास्टर जेनरल की शाखा ने रेलवे अधिकारियों की सहायता से भारतीय आश्रितों और भारतीय आहतों तथा अंगरेज फौजियों के परिवार वालों को करांची तक पहुंचाने के लिए तमाम स्पेशल ट्रेनों का प्रबन्ध किया। इसी शाखा ने क्वेटा के भारतीय और गुर्खा फौजियों के लगभग ५ हजार स्त्री बच्चों को उनके घर भेजने का प्रबन्ध किया। अंगरेज फौजियों के बाल-बच्चों के खाली करने का विषय तनिक कठिन था। इनमें से कुछ तो घायल थे और क्वेटे में उनके क्वार्टर खतरे में थे। इनको खीमों में ठहरा दिया गया था और बच्चों में छोटी चेचक और पेचिश की शिकायतें और भी अधिक कठिनाइयों के आने की चेतावनी दे रही थीं। भूकम्प के धक्के अभी आरहे थे। उनकी दयनीय अवस्था असंतोष और चिन्ताजनक थी। जितनी शीघ्रता की जासकी उन्हें करांची भेज दिया गया जहां वे एक अस्थायी कैम्प में ठहरा दिये गये और अन्त में उन में से ९०० "कर्रा आ" जहाज पर सवार करा कर, जिसे सरकार ने इसी मतलब से किराये पर लिया था, इंगलैन्ड रवाना कर दिये गये।

भोजन की समस्या को क्वार्टर मास्टर जैनरल ने बड़े ही सरल ढंग से हल कर दिया। भोजन प्रचुर परिमाण में प्राप्त होने लगा। आर्मी हैडक्वार्टर्स के सप्लाइज और ट्रान्सपोर्ट के डाइरेक्टर की देख-रेख में भारत के नाना भागों से रेलों पर और हवाई जहाजों से भी निम्न लिखित खाद्य पदार्थ शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने के प्रबन्ध किये गये :—

मैदा १२० टन, आटा ६६५४ टन, शक्कर २५ टन, दाल १४२ टन, घी २२ टन, डिब्बे का दूध ५ टन, मांस का पानी ६०५ पौंड, नमक ५० टन, डिब्बे का गोश्त १२ टन, साबूदाना, मुरमुरा और खास जौ ९०० पौंड।

इस सामान का अधिकांश भाग करांची, लाहौर और उत्तरी भारत के आर.आई.ए.एस.सी. सप्लाई डिपो से प्राप्त होता था लेकिन कैन्टीन कन्ट्राक्टर्स सिन्डिकेट ने खास कर आवश्यक सामान, डिब्बे का दूध व मांस का पानी, बहुत ही शीघ्रता से पहुंचा कर अमूल्य सेवाएं कीं। क्योंकि आर.आई.ए.एस.सी के सप्लाई डिपो में यह सब सामान साधारणत: अधिक परिमाण में नहीं रखा जाता और अस्पतालों में घायलों, खास कर बच्चों व औरतों के लिए इन चीजों की बड़ी ही जरूरत थी।

भारत वर्ष के आर्डनेन्स विभागों का सारा सामान तात्कालिक आवश्यकता के लिए तुरन्त दे दिया गया। ७०००० हजार आदमियों के ठहरने के लिए छोलदारियां पहले के थोड़े से दिनों के अन्दर ही भूकम्प पीड़ित प्रदेश में भेज दी गयीं और खानों का सामान, बिस्तरे और कपड़ों आदि के साथ पहुंचा दिया गया।

सरकार के समस्त आधुनिक उपायों से परिस्थित का मुकाबला किया गया। रायल एयर फोर्स के हवाई जहाज और वायसराय महोदय का हवाई जहाज "स्टार आफ इन्डिया" १ जून से १९ जून तक प्रतिदिन उड़ता रहा और सामान व आदमियों को पहुंचाता रहा हवाई जहाज लगभग ७७५ घन्टे प्रतिकूल वातावरण में भी उड़े। इस अवधि में पेशावर, लाहौर, कोहाट, अम्बाला और करांची से हवाई जहाज द्वारा निम्न लिखित वस्तुएं पहुंचायी गयीं

एक डाक्टरी पेशेवालों का दस्ता (जिस में १३ हवाई जहाज थे)

१५ मेडिकल अफसर :

१ पोस्ट और टेलीग्राफ अफसर।

११ नर्सें।

१२७५० पौंड चिकित्सा और डिब्बों की वस्तुएं।

४३०० पौंड कपड़े।

एक एक्सरे-रे का यन्त्र।

एक बेतार के तार का सेट।

इस अवधि में २२ बालिग और ४१ बच्चे हवाई जहाज द्वारा कराची, पेशावर और लाहौर पहुंचाये गये। यदि रायल एयर फोर्स के पाइलट और जमीन वाले अफसर महती और अनवरत सेवा न करते तो क्वेटा के भूकम्प पीड़ितों के कष्ट और भी अधिक भीषण बन जाते।

* * *

वायसराय का भूकम्प कोष

वायसराय महोदय ने स्वयं अपनी ओर से ५ हजार रुपये देकर कोष स्थापित कर क्वेटा भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए चन्दे की अपील की। इस अपील का प्रभाव विद्युत गति से पड़ा। चूंकि इस से थोड़े ही दिन पहले बिहार भूकम्प और सम्राट की रजत जयंती में उदारता-पूर्वक धन दिया जा चुका था इस लिए निराशा-वादियों का अनुमान था कि अपील का प्रभाव अवश्य ही कम होगा। लेकिन मामला बिलकुल उल्टा हुआ और जिस व्यक्ति ने प्रतिदिन प्रकाशित होने वाली चन्दे की सूचियों को पढ़ा उसे मानना पड़ा कि इस दर्दनाक घटना ने जो भारत वर्ष के एक सुदूर कोने पर घटित हुई, भारत वासियों और ब्रिटिश साम्राज्य के व्यक्तियों पर ही नहीं बल्कि समस्त संसार के हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। एक सप्ताह के अन्दर ही साढ़े चार लाख रुपया जमा हो गया। देश के छोटे-से-छोटे लोगों से लेकर बड़े-से-बड़े लोगों ने जी खोल कर चन्दा दिया। भारत सरकार ने १० लाख रुपये की सहायता दी। ब्रिटिश सरकार ने ५० हजार पौंड दिये। लन्दन के लार्ड मेयर ने चन्दे की फेरिस्त निकाली और उपनिवेशों ने खास कर आस्ट्रेलिया ने १० हजार

योग देकर उदारतापूर्ण सहानुभूति प्रकट की। विदेशी राष्ट्रों ने भी अपनी-अपनी सहानुभूति का क्रियात्मक परिचय दिया।

वायसराय भूकम्प कोष के उपयोग के सम्बन्ध में जो आदेश प्रारम्भ में निकाले गये थे वह तात्कालिक सहायता के सम्बन्ध में थे। बेकारी में बैठ कर खाने के लिए गरीबों को डाक्टरी सहायता और चीर-फाड़ के यन्त्रों के लिए अस्थायी रूप से रकमें दी गयीं। आश्रितों को उनके घर भिजवाने या जहां उन्हें विश्वास था कि सहायता प्राप्त हो सकेगी वहां पहुंचाने के लिए उन्हें रेलवे सम्बन्धी निशुल्क सहायता दी गयी। यह विश्वास भी दिलाया गया कि भूकम्प के कारण अनाथ होने वाले बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में आर्थिक अभाव दूर किया जावेगा। इन आदेशों के निकलने के थोड़े ही दिन बाद स्थानीय अफसरों को अधिकार दिया गया कि वे निर्धन कारीगरों को औजार खरीदने के लिए धन द्वारा सहायता दें जिस से कि कारीगर फिर अपने पेशे से पेट पाल सकें।

मध्यवित्त श्रेणी के व्यापारी और पेशेवर आदमियों को फिर से अपना कारबार जारी करने के लिए एक बड़े पैमाने पर मुफ्त रकमें बांटने का आदेश किया गया है। इन उपायों के विधान से यह आशा की जाती है कि बहुसंख्यक व्यक्तियों को, जिनको सहायता की आवश्यकता है मुफ्त सहायता मिलने पर उनका काम मामूली तौर पर चल निकलेगा।

वायसराय कोष, जो इस समय ३८ लाख के * करीब पहुंच गया है, उन व्यक्तियों की सेवा-सहायता में खर्च किया जा रहा है जिन को भूकम्प से व्यक्तिगत हानि हुई है। वायसराय कोष का हिसाब-किताब रखने में कम से कम खर्च होगा क्योंकि सारा काम सरकारी अफसरों द्वारा गैर सरकारी स्वेच्छा सहायकों की सहायता से हो रहा है। और शायद इसी सिलसिले में यह बताना आवश्यक होगा कि उस कोष का धन सरकारी इमारतों अथवा सम्पत्ति हानि की क्षति पूर्ति करने में खर्च न किया जायगा।

---

* इन आंकड़ों मे वह रकम जो, हिज़ मैजेस्टी की सरकार उपनिवेशों अथवा मेनसन हाउस फन्ड द्वारा दी गयी है, शामिल नहीं है।

पंजाब में दो तरह से सहायता कार्य हुआ :—

(१) क्वेटा के लिए डाक्टर, नर्सें, डाक्टरी चीजें आदि भेजी गयीं और

(२) आश्रितों की, जो प्रांत पहुंचे, सेवा-सुश्रूषा का प्रबन्ध किया गया।

भूकम्प से कुछ घण्टे बाद पंजाब सरकार से सहायता की अपील की गयी और उसने जितनी जल्दी हो सका, सरकारी व गैर-सरकारी डाक्टर, गवर्नमेन्ट अस्पताल व सेंट जान अम्बुलेंस की नर्सें, लाहौर के किंग मेडिकल कालेज, लाहौर कालेज तथा अन्य अस्पतालों के मेडिकल असिस्टेन्ट तथा बहुत सी दवाएं और आराम पहुंचानेवाली चीजें भेजीं। इसके बाद पंजाब की रेड क्रास सोसाइटी ने एक विशाल परिमाण में पट्टियां और कपड़े इकट्ठे करके भेजे।

व्हाय एक्साइटस एसोसिएशन के प्रांतीय सेक्रेटरी मि० हाग की अधीनता में डाक्टरों का एक मजबूत दल क्वेटे के लिए रवाना हुआ और एक पंजाब रोवर डिटैचमैन्ट जो अब भी क्वेटे में काम कर रहा है। इसके अतिरिक्त मुल्तान से मि० श्याम लाल चौधरी एक प्राइवेट मेडिकल डिटैचमैन्ट क्वेटा ले गये।

क्वेटा पंजाबियों से भरा था जिन में अधिकांश डेरागाजी खाँ, मुल्तान, लाहौर, गुजरानवाला और अमृतसर के रहनेवाले थे। और अनुमान किया जाता है कि भूकम्प के एक पखवारे बाद बारह से १५ हजार पंजाबी अपने प्रांत को जरूर लौट आये होंगे। पंजाब सरकार ने भूकम्प के बाद तुरंत १००००० रुपये वाइसराय सहायता कोष में दिये थे जो बाद में पंजाब प्रांत में सहायता कार्य में खर्च करने के लिए लौटा दी गयी। लाहौर का मेयो अस्पताल बहुत ही थोड़ी देर में बढ़ा दिया गया जिस से सैकड़ों आहतों के लिए स्थान निकल सका। अस्पताल के साधारण स्टाफ में उन लोगों को भर्ती किया गया जिन्होंने स्वेच्छापूर्वक अपनी सेवाएं प्रदान कीं। गैर सरकारी संस्थाओं ने प्राय: सभी बड़े-बड़े शहरों में विश्राम केन्द्र स्थापित किये। जन साधारण द्वारा व्यक्तिगत सेवा, धन, कपड़े और भोजन का दान उल्लेखनीय है। सहायता कार्य के सम्बन्ध में सब से अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि बड़े घरों की भारतीय महिलाओं ने भी स्वेच्छापूर्वक

अस्पतालों और प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों पर सेवा कार्य किया। रेड-क्रास एसोसियेसन, सेन्ट जान अम्बुलेंस और ब्वाय स्काउट एसोसियेसन तथा सरकार के निजी मेडिकल अफसरों और स्टाफ का काम बड़ा ही अच्छा था।

जिस समय रिलीफ ट्रेनें आश्रितों को लिए हुए करांची जाती और पंजाब से हो कर गुजरतीं, सभी बड़े-बड़े कस्बों के निवासी एक-दूसरे की तरफ देखते हुए सक्रिय सहानुभूति प्रदर्शित करते। बहावलपुर में स्वयं हिज हाइनेस नवाब साहिब रियासती सहायता कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। एक कहानी भी सुन पड़ी जो सम्भवतः मनगढ़न्त है कि आतिथ्य से आश्रित इतने अधिक प्रभावित होते कि वे रिलीफ ट्रेनों से उतर पड़ते, गाड़ी रुकने के दूसरे स्टेशन तक पैदल चलते, वहां पहुंच कर दूसरी स्पेशल ट्रेन पकड़ते और इस प्रकार पहले स्टेशन पर पहुंच कर दुबारा भोजन का आनन्द लेते।

सिन्ध में, खास कर करांची में अधिकारियों और स्थानीय संस्थाओं ने बड़े यत्न से सेवा कार्य में योगदान दिया। करांची में जहां आश्रितों के झुण्ड के झुण्ड पहुंच रहे थे कैम्प खड़े किये गये। मि. अब्दुल-सत्तार की अधीनता में मेमन रिलीफ सोसाइटी ने एक कैम्प खड़ा किया। १३ अगस्त तक सहायता कार्य में ५०००० रुपये खर्च किये। मेयर फन्ड कमेटी ने अन्य आश्रित कैम्प खोले और सहायता कार्य में स्वयं सेवकों ने हार्दिक सहायता प्रदान की। बाद में इन कैम्पों के आश्रितों को खिलाने-पिलाने और कपड़े देने का प्रबन्ध वायसराय फन्ड कमेटी ने खुद अपने हाथ लिया। वायसराय फन्ड कमेटी ने सिन्ध के कमिश्नर की देख-रेख में आश्रितों के लिए भोजन, वस्त्र, धाम और रेलवे के मुफ्त पासों का प्रबन्ध किया। सक्खर, हैदराबाद, नवाब शाह लड़काना और दादू में भी, इसी प्रकार सहायता कार्य हुआ और हो रहा है।

अन्त में नार्थ वेस्टर्न रेलवे की सेवाओं का थोड़ासा वर्णन रोचक होगा क्वेटे के अन्य समुदायों की भांति स्थानीय रेलवे के स्टाफ और मकानों को भी अधिक नुकसान पहुंचा। रेलवे कर्मचारियों के बहुत से स्त्री-पुरुष और बच्चे मर गये। रेलवे स्टेशन,

मालगुदाम और रेलवे क्वार्टर्स सब गिर पड़े थे। केवल वे ही तीन बंगले बचे जो सन् १९३१ के भूकम्प के बाद भूकम्प के धक्के सहन करने योग्य बनाये गये थे। लोकोशेड की छत गिर गयी थी लेकिन सौभाग्य से इंजनों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था। रेलवे लाइन ज्यादा न टूटी थी और जो कुछ टूटी-फूटी भी थी उसकी मरम्मत शीघ्र कर ली गयी थी।

यद्यपि रेलवे के स्टाफ के बहुतसे आदमी मर गये थे, फिर भी यह आवश्यक था कि रेलें जारी रखी जायं क्योंकि येही क्वेटे से बाहर दुनिया का सम्बन्ध स्थापित करती थीं। रेलवे अधिकारियों और उनके स्टाफ के उत्तम कार्य के फलस्वरूप आश्रितों को ले जाने वाली ट्रेनें-स्पेशल, अम्बुलेन्स ट्रेनें और मालगाड़ियां-अबाध गति से दौड़ती रहीं।

पहले दो दिनों में अर्थात ३१ मई और १ जून को आश्रितों के झुन्ड के झुन्ड आये और क्वेटे से जाने वाली ट्रेनों में खूब भरभर कर रवाना हुए। लग भग ५ हजार यात्री इन दो असाधारण दिनों के अन्दर रवाना हुए। ३१ मई और १४ जून के बीचमें ८८ ट्रेनें क्वेटे से छोड़ी गयीं। इनमें से ५९ ट्रेनें वे थीं जो अपने निर्धारित टाइम टेबुल के अनुसार दौड़ती थीं, १८ आश्रितों की ट्रेनें, ४ अम्बुलेन्स ट्रेनें और ७ फौजी ट्रेनें थीं। २ और १४ जून के भीतर २८००० यात्री क्वेटे से रवाना किये गये। यह सेवा कार्य का एक महान रेकार्ड है जिसकी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है।

परिच्छेद ६

उद्धार और सहायता के उपाय

पहले दो हफ्तों में स्थानीय अधिकारियों ने मलवा खोद कर खोदी हुई सम्पत्ति प्राप्त करने के जो प्रबन्ध किये उनका उल्लेख पहले किया जा चुका है। जो कारण पहले बताये जा चुके हैं उनके आधार पर विस्तृत रूप से सम्पत्ति उद्धार का कार्य साध्य न था लेकिन गड़ी हुई सम्पत्ति की रक्षा और अनधिकृत व्यक्तियों का प्रवेश रोकने के लिए यथेष्ट प्रबन्ध कर दिये गये थे जो अब तक जारी हैं। इस समय शहर के चारों तरफ दुहरे कटीले तार लगे हुए हैं जिसकी रक्षा पुलिस और फौज दिन रात करती है और रात को इस पर तेज रोशनी डाली जाती है।

पब्लिक हेल्थ कमिश्नर को स्थिति का निरीक्षण करने को तैनात किया गया था और उनकी रिपोर्ट, जो १९ जून को छपी वह समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हो चुकी है। उनकी खास-खास सिफारिशें ये थीं कि तत्काल एक बड़े पैमाने पर काम करना अनुचित है क्योंकि एक साथ बहुत सी लाशों के निकलने से स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। इसी के साथ करनल रसेल ने खास-खास बाजारों, में नचेरी और कासी के समीपवर्ती स्थानों में मलवे की खुदाई और बड़ी-बड़ी सड़कों के साफ करने का काम शुरू करने की राय दी। सम्पत्ति के मालिकों को क्वेटा इस लिए बुलाया गया कि वहां जा कर वे खुद देख लें कि उनकी सम्पत्ति की रक्षा के लिए क्या प्रबन्ध किये गये हैं। १४ जून तक मि० बी.एम. स्टेग, रिलीफ कमिश्नर ने तमाम प्रान्तीय सरकारों के पास "दावा फार्म" भेज दिये, इसी के साथ यह घोषणा की गयी कि जो लोग यह समझते हों कि वे क्वेटे की गड़ी हुई सम्पत्ति के अधिकारी हैं, उन्हें, जहां वे रहते हों वहां के डिप्टी कमिश्नर, या कलक्टर या पोलिटिकल एजेन्ट के पास अपना-अपना दावा फार्म भर कर भेज देना चाहिए।

जुलाई के आरम्भ में वायसराय महोदय और कमांडर-इन-चीफ साहब क्वेटा पधारे और स्थानीय अफसरों से परिस्थिति पर ब्योरे-वार विचार विनिमय किया। और यह निश्चित किया गया कि अनेक

रसेल की सिफारीशों को क्रियात्मक रूप दिया जाय और इस के अतिरिक्त शहर की कुछ उन दुकानों और मकानों के मलवे की भी सफाई शुरू की जाय जहां इमारत को कम नुकसान पहुंचा है और जहां सवारियों वगैरह के जाने में कठिनाई न हो। इसी बीच सड़कों की सफाई का काम होता रहा और इस काम के लिए दो हजार मजदूरों का एक संगठित दल प्राप्त था।

३० जुलाई को एक कानून "क्वेटा डिस्ट्रिब्यूसन आफ सैल्वड प्रापर्टी ला, १९३५" जारी किया गया। इस में कलेक्टर कमिश्नर अथवा कमिश्नरों, जो बिलोचिस्तान के गवर्नर जेनरल के एजेन्ट द्वारा नियुक्त किये गये थे, कर्तव्य और कानूनी स्थिति का खुलासा किया गया था। साथ-साथ जिन दुकानों और मकानों का मलवा साफ करने पर सम्पति मिली उनके मालिकों को नोटिस दिये गये।

१ अगस्त तक पन्डर्सन रोड, ब्रूस रोड, हबीबनाला, सूरजगंज रोड, मिशन रोड, कांसी रोड और कार्निस रोड साफ हो चुकी थी। रैस कोर्स का आश्रितों का कैम्प ब्रिवरी के पास एक जमीन के टुकड़े पर स्थानान्तरित कर दिया गया था और उसमें ११३० आश्रित रखे गये।

इस खुदाई के सिलसिले में ३४ लाशें बरामद हुई और इस बात की पूरी-पूरी सावधानी रखी गयी कि उनके दफन-कफन में धार्मिकता की उपेक्षा न हो। इन लाशों के बरामद होते वक्त उनकी जो हालत थी उस से प्रकट हो रहा था कि सम्भवत; ये लोग पहले ही धक्के में मर चुके हैं। इस सिलसिले में हम उस आश्चर्यजनक किस्से का उल्लेख करना चाहते हैं जो, एक हलवाई के सम्बन्ध में जिसका नाम जेठानन्द था, समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि वह ३ अगस्त को अपने विनष्ट मकान के मलवे में ६७ दिन तक दबा रहनेके बाद रास्ता खोदकर निकल आया। इस कहानी पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इस व्यक्ति का कोई पता नहीं चलता। शहर में उसके दोनों मकानों के स्थानों का अच्छी तरह निरीक्षण किया गया और देखा गया कि उसमें कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिस से बाहर निकल आना सम्भव हो। बहुत सम्भव है कि बेचारा जेठानन्द अपने मकानों के मलवे के नीचे दफन हो। १२ अगस्त तक येट

रोड, हारून रोड और मसजिद रोड साफ हो गयीं और ४१३ लाशें दफनादी या जला दी गयीं। उस समय से मलवा हटाने का काम नियमित रूप से चल रहा है। क्लेम्स कमिश्नर के द्वारा सम्पत्ति के मालिकों को प्राप्त सम्पत्ति देने का कार्य आरम्भ हो गया है। मलवे को बाहर निकालने के लिये एक लाइट रेलवे का सामान इकट्ठा किया जा रहा है। क्वेटा आने वाले सम्पत्ति के मालिकों के ठहराने के लिये टीन के झोंपड़े बनाये जा रहे हैं।

देहातों में सिंचाई के नाले साफ करने और बनाने के नक्शे तैयार किये जा रहे हैं। इस काम में लगभग डेढ़ लाख रुपया खर्च होगा जो सरकारी खजाने से दिया जाएगा। इसके लिए बड़ी शीघ्रता से काम हो रहा है जिस से कि अगली फसल में इस से लाभ उठाया जा सके। क्वेटे के परगने में विध्वस्त मकानों को फिर से बनाने के लिए डेढ़ लाख रुपये की योजना स्वीकृत हो चुकी है।।

कलात स्टेट में १० हजार रुपये तात्कालिक सहायता के लिए और ५० हजार रुपये सिंचाई के नालों की मरम्मत और बनाने के लिये वायसराय महोदय के फन्ड से दिये गये हैं। मकानों को फिर से बनाने के लिए सामान खरीदने के लिये १ लाख रुपया अभी दिया गया है।

मलवा हटाने की कार्रवाइयों के इस संक्षिप्त वर्णन को समाप्त करते हुए जन साधारण की भलाई के लिए यह बता देना उचित होगा कि मलवा हटाने और सहायता देने के सम्बन्ध में भारत सरकार ने क्या विशिष्ट संगठन किया है।

भारत सरकार के रिलीफ कमिश्नर मि०बी०एम० स्टेग।

क्वेटे में

लेफ्टनेन्ट कर्नल ए.ई.बी. पार्सन्स सी.बी.ई., डी.एस.ओ., डिप्टी एजेन्ट गवर्नर जेनरल बिलोचिस्तान—भूकम्प के सम्बन्ध में अनेक विषयों के निरीक्षक और प्रान्तीय रिलीफ कमेटी के अध्यक्ष।

मि०ओ०सी०बी० सेन्ट जान, सेक्रेटरी डिप्टी एजेन्ट, गवर्नर जेनरल—क्वेटा प्रदेश और क्वेटा रिलीफ फन्ड से दी जाने वाली सहायता के सम्बन्ध में दरख्वास्तें लेते हैं। हताहतों और आश्रितों के सम्बन्ध में पूछी गयी बातों का जवाब देते हैं।

मेजर ई०एच० गौल्डैंक क्लेम्स कमिश्नर-मुहम्मद रकबे में मलबे के हटाने के सम्बन्ध में तमाम मामलों की निगरानी करते हैं और गड़ी हुई सम्पत्ति के बारे में तमाम दावे तय करते हैं और पूछताछ का जवाब देते हैं तथा भूकम्प पीड़ितों को कारबार में लगाने के लिए एक दफ्तर चलाते हैं। उनके मातहत दो पोलिटिकल अफसर हैं जो टूटे हुए मकानों के सम्पत्ति उद्धार कार्य का निरीक्षण करते हैं।

बिलोचिस्तान में चीफ इंजीनियर कर्नल डावसन पब्लिक वर्क्स के इन-चार्ज हैं। उनकी अधीनता में सिविल विभाग में मि० ओडिन टेलर सुपरिन्टेंडिंग इंजीनियर हैं जो पहले सक्खर के बांध के निर्माण के समय काम कर चुके हैं। वह सिंचाई के काम के इन चार्ज हैं (जिसमें भूकम्प के बाद नष्ट हुए सिंचाई के नालों के पुनर्निर्माण का कार्य भी सन्निहित है) वे अस्थायी निवास-स्थान-निर्माण और खुदाई के काम का भी निरीक्षण कर रहे हैं।

डा० हालैंड को जो क्वेटे में एक मिशन अस्पताल के इन-चार्ज हैं अस्थायी रूप से चीफ मेडिकल अफसर नियुक्त किया गया है। पंजाब सरकार ने मेजर निकोल आई०एम०एस० को पब्लिक हेल्थ विभाग से लेकर क्वेटे में चीफ हेल्थ अफसर नियुक्त किया है।

लाशों को हटाने के सम्बन्ध में मि० डाग की अधीनता में बाल-चरों की एक पार्टी बहुत बड़ी सेवाएं कर रही है।

परिच्छेद ७

क्वेटे में मार्शल ला

कभी-कभी कहा जाता है कि मार्शल ला शब्द का अर्थ ही उल्टा है और वास्तविकता यह है कि उसका अर्थ कानून का अभाव है। कुछ लोग मार्शल ला को संत्रास का शासन कहते हैं जिस में ऐसे कार्यों को, जो साधारण अवस्था में अपराध नहीं समझे जा सकते, ऐसे भीषण अपराध समझ लिये जाते हैं जिन के लिए बड़ी-कड़ी सजा मिलती है। सधारणतः जिन परिस्थितियों में मार्शल ला जारी किया जाता है उनके सम्बन्ध में बेसमझे-बूझे इन दोनों प्रकार के विचारों में सत्यता चाहे जो कुछ हो, यह बिना किसी आलोचना के भय के कहा जा सकता है कि क्वेटे में जितने दिनों मार्शल ला लागू रहा अर्थात १ जून से २८ जून तक, तो वहां ये दोनों धारणायें असत्य प्रमाणित हुई ! सचमुच यह दुख की बात है कि इस अवधि में वहां जो शासन जारी रहा उसके लिए कोई और निश्चित शब्द नहीं है। जब कि सिविल शासन को एक ऐसे पैमाने पर संगठित विरोध का सामना करना पड़ता है जिसके मुकाबले में मौजूदा पुलिस दल से परिस्थिति को संभालना असम्भव हो जाता है, तो निस्सन्देह मार्शलला, प्रकृतिस्थ अवस्था के शासन यन्त्र को हटा कर उसका स्थान ग्रहण कर लेता है। इस लिए सिविल अधिकारी शासन सूत्र को फौजी अधिकारियों के सुपुर्द कर देते हैं जो अपनी शक्ति के बल पर शासन भार संभाल लेते हैं।

वस्तुस्थिति की दृष्टि से मार्शल ला की प्रारम्भिक अवस्था में सदा एक ऐसा समय होता है जब कि फौज के अफसरों का काम केवल वस्तुस्थिति की स्पष्ट आवश्यकताओं पर निर्भर करता है और जब कि सिविल शासन एक उचित काल के अन्दर प्रबन्ध को फिर से नहीं संभाल सकता तो इस बात की आवश्यकता होती है कि आकस्मिक परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये एक कानून या आर्डिनेंस निकाल कर, मि मार्शल ला जारी कर दिया

जाय। क्वेटे में एक निश्चित काल तक सिविल शासन स्थगित हो गया था लेकिन यह सादृश्यता यहीं समाप्त हो जाती है। किसी मानव समुदायने संगठित विरोध नहीं किया और फौजी अधिकारियों ने शासन सूत्र अपने हाथ में इस लिए नहीं लिया कि उनके पास शक्ति अधिक थी या इसलिए कि उस शक्ति की अवश्यकता थी, बल्कि सिर्फ इसलिए कि फौजी शासन ही सिर्फ बाकी रहा था जो काम कर रहा था। सिविल अधिकारी तो बिलकुल ही नेस्तनाबूद हो गये थे।

अतएव सिविल शासन के स्थान पर जो फौजी शासन स्थापित हुआ वह अपने दृष्टिकोण और कार्यों में सम्पूर्णत: उदार था। इसका उद्देश्य यही एक था कि साधारण कानून के पालन में विघ्न न आवे। जो रेगुलेशन जारी किये गये उनमें अपराधों की कोई फेहरिस्त नहीं दी गयी केवल वे ही अपराध दिये गये थे जो क्वेटे के भूकम्प पीड़ितों की हितरक्षा के लिए दन्डनीय समझे गये और क्रियात्मक रूप से किसी ने भी इनका विरोध नहीं किया, बल्कि जो लोग क्वेटे में रह गये थे उन्होंने हार्दिक सहयोग दे कर इन्हें स्वीकार किया।

१ जून से चार हफ्तों तक, जब कि जेनरल कार्सलेक के मातहत फौजी अधिकारियों ने प्रबन्ध भार अपने हाथ लिया, किसी क्षेत्र में, जो पहले सर्वसाधारण के लिए खुला हुआ था, प्रवेश करना दन्डनीय अपराध हो गया, बेजा मुनाफा उठाने की रोक-थाम कर दी गयी और सनसनीखेज अफवाहों को बन्द करने के लिए समाचारों पर हल्का सेंसर बिठा दिया गया। मार्शलला क्षेत्र के शासनकर्ताओं को फौजी अदालतें बिठाने और उनके निर्णयों का समर्थन करने, सरसरी सजाएं देने और विशेष दन्ड देने के, जैसे कि कुछ अपराधों पर कोड़े मारने के अधिकार दिये गये। क्वेटे के बाहर जो इलाके मार्शलला के मातहत आये उन में उन अधिकारों का उपयोग कभी नहीं किया गया। खुद क्वेटे में सिर्फ ५ मर्तबा अदालतें कुल ८ आदमियों का मुकदमा करने के लिए बैठायी गयीं। ऐसी एक भी अदालत नहीं बैठायी गयी जिसमें सब फौजी हा अफ़सर हों। हर हालत में प्रेसीडेन्ट सिविल मजिस्ट्रेट होता था। पांच मुकदमों में से चार में सजाएं दी गयीं। तीन मुकदमें साधारण कानून के अन्त-

गये थे, एक मामला औरत भगाने का था जिसमें बुरे चालचलन के एक पुराने ग्रामीण अपराधी को १२ कोड़े और सख्त कैद की सजा दी गयी, एक मुकदमा हमला करने के सम्बन्ध में एक मेहतर के खिलाफ था जो फौजी दुग्धशाला के नौकरों में हड़ताल कराने की चेष्टा कर रहा था और जिसे ३ महीने कैद की सजा दी गयी। एक मुकदमा चोरी का था जिसमें २ आदमी एक गिरी हुई दूकानसे चोरी करते हुए पकड़े गये थे और उनमें से एक को ३ महीना और दूसरे को ६ महीने की कैद की सजा दी गयी।

सिर्फ ३ आदमी रेगुलेसन भंग करने के सम्बन्ध में अपराधी ठहराये गये। ये आदमी शहर के एक हिस्से में, जहां प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी, गिरे हुए मकानों के मलबे को टटोलते हुए पकड़े गये थे। उन्हें ६-६ कोड़ों की सजा दी गयी लेकिन उन में से एक को वृद्ध होने के कारण सजा नहीं दी गयी।

काम का बहुत बड़ा भार असिस्टेण्ट जज एडवोकेट जेनरल पर पड़ा जिन्हें बिना किसी दफ्तर की इमारत के और बिलकुल घटे हुए आफिस-स्टाफ के साथ काम को चलाने के लिए समस्त प्रारम्भिक कार्य करने पड़े, जिनमें मसविदा तैयार करना और रेगुलेसन की प्रतियां वितरण करना तथा बन्दियों को हिरासत में रखना और भेजना था।

सौभाग्य से, जैसा कि बताया जा चुका है, विध्वस्त क्षेत्र में कानून की अवहेलना करने का प्रयत्न बहुत कम या नहीं किया गया और परिस्थिति की भीषणता की दृष्टि से तथा लूटपाट से सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए जो प्रतिबन्ध लगाये गये थे उनके अतिरिक्त जनसाधारण को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई।

जब सिविल अधिकारियों को अपनी शक्ति फिर से प्राप्त हो गयी तो यह तथाकथित मार्शल ला २८ जून को उठा लिया गया। परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए रेगुलेशन द्वारा प्राप्त कुछ विशेषाधिकार अभी जारी हैं और प्रश्न किया जा सकता है कि इस काम के लिए कानून या आर्डीनेंस क्यों नहीं बनाया गया।

ब्रिटिश बिलोचिस्तान में बनाया गया कानून (इमर्जेन्सी एड-मिनिस्ट्रेशन) रेगुलेशन १९३५ ब्रिटिश बिलोचिस्तान और बिलो-

चिस्तान एजन्सी टेरिटरीज के लिए बनाया गया है। बिलोचिस्तान एजन्सी टेरिटरीज, जिसमें क्वेटा बसा हुआ है, ब्रिटिश भारत में नहीं हैं, इसलिए उसके सम्बन्ध में कानून बनाने के अधिकार इन्डियन (फारेन जुरिस्डिक्सन) आर्डर-इन-कौन्सिल १९०२ से प्राप्त होते हैं।

चूंकि आर्डर इन कौन्सिल में यह दफा रखी गयी है कि ब्रिटिश बिलोचिस्तान में जो कानून उस वक्त लागू हों वे बिलोचिस्तान एजेन्सी में भी जारी होंगे, तो जरूरत सिर्फ इस बात की थी कि प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश बिलोचिस्तान के लिए कानून बना दिया जाय, क्योंकि ऊपर की गयी घोषणा के अनुसार ब्रिटिश बिलोचिस्तान में जारी हो कर वही कानून एजेन्सी के इलाकों में अपने आप जारी हो जायगा। चूंकि ब्रिटिश बिलोचिस्तान में कोई स्थानीय व्यवस्थापक-सभा नहीं है इसलिए गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया एक्ट की दफा ७१ के अनुसार कानून बनाने के जो अधिकार दिये गये हैं वे खास कर ब्रिटिश बिलोचिस्तान के लिए कानून बनाने के साधारण साधन प्रदान करते हैं और चूंकि साधारण साधन उपस्थित थे, इसलिए गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया एक्ट की दफा ७२ के अनुसार आर्डीनेन्स के द्वारा विशेषाधिकार का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं थी।

परिच्छेद ८

क्वेटा का भविष्य

क्वेटा का भविष्य अभी अनिश्चित है और चूंकि इस सम्बन्ध में हितों का बाहुल्य है इसलिए अभी यह भविष्यवाणी करना असम्भव है कि अन्तिम निर्णय क्या होगा। क्वेटा प्लेटो के ऋतु की कठोरता के कारण जाड़े के दिनों में इमारतें बनाने का काम सम्भव नहीं है। इसलिये भारत सरकार को इस बीच दम लेने का मौका मिलेगा और साथ ही क्वेटा के पुनर्निर्माण की कठिन समस्या पर भी विचार किया जाएगा। इसके साथ ही किसी प्रकार का पुनर्निर्माण प्रारम्भ होने से पहले बहुतसा प्रारम्भिक कार्य करना है और इस सम्बन्ध में समस्याओं को सुलझाने में समय नष्ट नहीं किया जा रहा।

सब से पहले, नीति का प्रश्न है, क्या सैनिक दृष्टि से वर्तमान छावनी या उसके आस पास उतनी ही सेना रखने की आवश्यकता है जितनी वहां वर्तमान में है? क्या यह भी समान रूप से आवश्यक है कि सिविल शासन का हेड क्वार्टर वहीं रहे जहां है? और व्यापार सम्बन्धी आवश्यकताएं? क्या वे आवश्यकताएं और गर्मियों में स्वास्थ्यप्रद स्थान होने का आकर्षण संयुक्त रूप से थोड़े दिनों में भावी भूकम्पों का भय दूर कर देगा और नगर फिर उसी आकार का बन जायगा जिस आकार को वह ३० मई १९३५ को था? यदि इन सब प्रश्नों का उत्तर अनुकूल भी हो तो बहुतसी आनुषंगिक समस्यायें शेष रह जाती हैं। भावी भूकम्प के खतरे का निश्चय करना ही होगा, यह देखना ही होगा कि दूसरे स्थान पर क्वेटे को बसाना सम्भव है या नहीं और वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा भूकम्पप्रूफ मकान बना कर रक्षा का प्रबन्ध करने के साधनों पर पुन विचार भी करना ही होगा। इन सब के ऊपर भी रुपये का सवाल है।

पिछले कई हफ्तों से भारत सरकार इन्हीं सब समस्याओं पर विचार कर रही है। आनेवाले जाड़े के मौसम के लिए अस्थायी

प्रबन्ध कर लिया गया है। सैन्यसमूह का एक भाग क्वेटे में रहेगा और शेष कहीं और, बहुत करके सिबी में कैम्प में, रखा जायगा। वेस्टर्न कमांड का हेड क्वार्टर्स तो कराँची जा ही चुका।

कुछ भी हो, स्थायी प्रबन्ध के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय चाहे जो कुछ हो, यह स्पष्ट है कि भवन निर्माण के सम्बन्ध में भारत सरकार के सामने एक विशाल योजना उपस्थित है। नक्शे और तखमीने तैयार करने होंगे और डिजाइन तथा विवरण भी। निस्सन्देह पुनर्निर्माण में करोड़ों खर्च होंगे। जब यह स्मरण होता है कि नयी दिल्ली के निर्माण में प्रति वर्ष १ करोड़ रुपये से अधिक व्यय न हुआ था, जब बिलोचिस्तान के भवन निर्माण ऋतु के अल्प स्थायित्व साथ ही बाह्य जगत से आवागमन के अल्प साधन पर विचार किया जाता है, तो स्पष्ट हो जाता है कि इंजीनियरों को कई साल तक कठोर परिश्रम करना होगा।

वर्तमान में इस से अधिक नहीं बताया जा सकता। निर्णय यथासम्भव शीघ्र किये जायँगे। इस के साथ ही आगामी व्यवस्थापिका परिषद में जनमत को प्रकाशित होने का सुयोग मिलेगा।

जो बात पूरी तरह निश्चित है, यह है कि कोई सरकार-निश्चय ही भारत सरकार- किसी ऐसे क्षेत्र में, जहां ३० मई की रात को सी प्रलयंकर दुर्घटना की पुनरावृत्ति की आशंका हो, अपने कर्मचारियों को नियुक्त करने की कल्पना स्वप्न में भी न करेगी। और जबतक सरकार को संतोष न हो जायगा कि ऐसी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए पर्याप्त आश्वासन प्राप्त हो सकता है, क्वेटा में, अथवा क्वेटा के समीप पुनर्निर्माण करने का निर्णय न किया जायगा।

Sketch map of QUETTA showing
MAJOR-GENERAL H. KARSLAKE'S DISPOSITION OF TROOPS FOR RESCUE WORK
(Made at 6 a m, 31st May, 1935)

6 C G S I No 8004 8 34

GENERAL STAFF